RNI No. UPHIN/2000/03766 ● ISSN No. 2581-3528 ₹ : 20

केशव संवाद

(मई-2025)

नागरिक कर्तव्य की अनूठी मिसाल

विंग कमांडर व्योमिका सिंह

कर्नल सोफिया कुरैशी

सुखार्थाः सर्वभूतानां मताः सर्वाः प्रवृत्तयः।
सुखं च न विना धर्मात्तस्माद्धर्मपरो भवेत्॥

सभी प्राणियों की किसी भी कार्य को करने की प्रवृत्ति आत्म-सुख की प्राप्ति के लिए होती है। धर्म के बिना सुख नहीं मिलता, अतः मनुष्य को धर्मपरायण होना चाहिए।

मई २०२५

ग्रीष्म ऋतु

वैशाख/ज्येष्ठ

वि.सं. २०८२

शक सं. १९४७

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
				श्री गणेश चतुर्थी व्रत १ वैशाख शुक्ल पक्ष चतुर्थी	आदि गुरु श्री शंकराचार्य जयंती २ वैशाख शुक्ल पक्ष पंचमी	श्री गंगा सप्तमी ३ वैशाख शुक्ल पक्ष षष्ठी
४ वैशाख शुक्ल पक्ष सप्तमी	५ वैशाख शुक्ल पक्ष अष्टमी	श्री सीता नवमी ६ वैशाख शुक्ल पक्ष नवमी	७ वैशाख शुक्ल पक्ष दशमी	मोहिनी एकादशी ८ वैशाख शुक्ल पक्ष एकादशी	प्रदोष व्रत ९ वैशाख शुक्ल पक्ष द्वादशी	१० वैशाख शुक्ल पक्ष त्रयोदशी
श्री नृसिंह जयंती ११ वैशाख शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	बुद्ध पूर्णिमा, श्री कूर्म जयंती १२ वैशाख शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	श्री नारद जयंती १३ ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष प्रतिपदा	वृष संक्रान्ति १४ ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष द्वितीया	१५ ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष तृतीया	श्री गणेश चतुर्थी व्रत १६ ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष चतुर्थी	१७ ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष पंचमी
१८ ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष षष्ठी	१९ ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष सप्तमी	२० ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष अष्टमी	२१ ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष नवमी	२२ ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष दशमी	अपरा/अचला एकादशी २३ ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष एकादशी	प्रदोष व्रत २४ ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष द्वादशी
रासबिहारी बोस जयंती २५ ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष त्रयोदशी	वट सावित्री व्रत २६ ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	श्री शनि जयंती, भौमवती अमावस्या २७ ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष अमावस्या	वीर सावरकर जयंती २८ ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष प्रतिपदा/द्वि.	श्री महाराणा प्रताप जयंती २९ ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष तृतीया	श्री गणेश चतुर्थी व्रत ३० ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष चतुर्थी	देवी अहिल्याबाई होल्कर जयंती ३१ ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष पंचमी

यहाँ मेरा अपना कुछ भी नहीं, जिसका है मैं उसी को अर्पित करती हूँ। देवी अहिल्याबाई होल्कर

केशव संवाद

RNI No. UPHIN/2000/03766

ISSN No. 2581-3528

मई, 2025

वर्ष : 25 अंक : 05

प्रबंध निदेशक
अणंज कुमार त्यागी

संपादक
कृपाशंकर

कार्यकारी संपादक
डॉ. नीलम कुमारी

पृष्ठ संयोजन
वीरेंद्र पोखरियाल

संपादकीय कार्यालय
प्रेरणा शोध संस्थान न्यास
सी-56/20 सेक्टर-62, नोएडा -201309
फोन न. 0120 4565851
ईमेल : keshavsamvad@gmail.com
वेबसाइट : www.prernasamvad.in

स्वामी पंकज कुमार की ओर से मुद्रक/प्रकाशक रमन चावला द्वारा चन्द्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा.लि. नोएडा से मुद्रित तथा केशव भवन 105 आर्यनगर सूरजकुंड रोड मेरठ से प्रकाशित

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा मेरठ की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा। संपादक

विषय सूची

नागरिक कर्तव्य की अनूठी मिसाल सोफिया कुरैशी 05

समाज के पंच परिवर्तन 08

राष्ट्र धर्म की अद्भुत मिशाल आकाश पुत्री विंग क. व्योमिका सिंह..........10

नागरिक कर्त्तव्यों की सीख सिखा गया एक सच्चा बफादार भारतीय..........11

नमन सिंदूर 13

'पंच परिवर्तन' से समाज व राष्ट्र का निर्माण 15

पर्यावरण संरक्षण में युवाओं के लिए प्रेरणादायक बनती फिल्में 17

जो कहा वो किया - ऑपरेशन सिंदूर 19

सामाजिक दायित्वों और नागरिक कर्तव्यों के प्रति सजग दिखे 21

भारत के वन मैन जादव पायेंग 23

नई शिक्षा नीति के प्रकाश में चमकताएक आदर्श विद्यालय 25

'सिंदूर का संकल्प' 27

पाठकगण पत्रिका के बारे में अपने सुझाव एवं प्रतिक्रिया,'संपादक के नाम पत्र' शीर्षक से ई-मेल (keshavsamvad@gmail.com) के माध्यम से भेज सकते हैं। चुने हुए पत्रों को पत्रिका के अगले अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

ISSN No. 2581-3528

संपादकीय......................................

राष्ट्रधर्म, एकता और ऑपरेशन सिंदूर

आज देश युद्ध के मुहाने पर खड़ा है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि भारत ने कभी किसी देश पर पहले आक्रमण नहीं किया, परंतु पाकिस्तान ने पहलगाम की षड्यंत्रकारी एवं कायरतापूर्ण हरकत कर युद्ध की शुरुआत की और मानवता को कलंकित करने का कार्य किया है। भारत ने अपने राष्ट्रधर्म का निर्वहन करते हुए 'ऑपरेशन सिंदूर' के माध्यम से अपने विरुद्ध छेड़े गए युद्ध का मुंहतोड़ जवाब देने की शुरुआत कर दी है। भारत अपने राष्ट्रधर्म की रक्षा के लिए पूर्णत: तैयार है।

आज देश का न केवल प्रत्येक सैनिक, बल्कि प्रत्येक नागरिक अपने कर्तव्यबोध एवं स्वाभिमान के साथ नागरिक कर्तव्य का निर्वहन करने के लिए सज्ज है। प्रत्येक धर्म, जाति, संप्रदाय के लोग एकमत एवं संगठित होकर आतंकवाद, देशविरोधी एवं मानवता विरोधी ताकतों के विरुद्ध एकजुट होकर खड़े हैं। यह स्थिति हमें स्मरण कराती है कि-

यह रामकृष्ण की भूमि है, स्वामी दयानंद सरस्वती के सत्य और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का देश है, विवेकानंद के शिकागो के बंधुत्व के संदेश का देश है, महात्मा गांधी के सत्य और अहिंसा वाला देश है, नेताजी सुभाष चंद्र बोस के 'जय हिंद' के उद्घोष का देश है, भगत सिंह जैसे राष्ट्रभक्त क्रांतिकारी वीरों की इंकलाबी शहादत का देश है, पन्नाधाय के राष्ट्र रक्षा में ममता के अनुपम त्याग और बलिदान का देश है, शहीद धनसिंह कोतवाल की क्रांति की ज्वाला का देश है, अटल बिहारी वाजपेयी जी के 'शत्रु का काल बन जाओ' की ललकार का देश है, और वीर अब्दुल हमीद के राष्ट्रीय शौर्य व पराक्रम का देश है।

वीर अब्दुल हमीद जैसे अनेक वीर और वीरांगनाओं का यही त्याग, बलिदान, शौर्य एवं पराक्रम आज ऑपरेशन सिंदूर की अगुवाई कर रही कर्नल सोफिया कुरैशी और व्योमिका सिंह की राष्ट्रभक्ति एवं राष्ट्रधर्म में परिलक्षित होता है। आज प्रत्येक भारतीय के मन में यह इच्छा बलवती होती दिख रही है कि अगर सीमा पर जवान कम पड़ जाएँ, तो प्रत्येक नागरिक मातृभूमि पर बलिदान होने को तैयार है। यह दृश्य हमें 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की याद दिलाता है, जिसमें प्रत्येक वर्ग-महिला-पुरुष, किसान-मजदूर-सबने अपने प्राणों की आहुति दी थी।

अब यही समय है, सही समय है, जब हम अपने नागरिक कर्तव्य का निर्वहन करते हुए न केवल पाकिस्तान को, बल्कि संपूर्ण विश्व को यह स्मरण कराएँ कि मातृभूमि की रक्षा हेतु सर्वस्व समर्पित करने का प्रण, संकल्प और दृढ़ इच्छाशक्ति भारतीयों में कितनी बलवती है। आज राष्ट्र की रक्षा का यह यज्ञ हम सबकी आहुति माँगता है-एकता, साहस, और समर्पण की आहुति।

तन समर्पित, मन समर्पित, और यह जीवन समर्पित।

चाहते हैं मेरे देश की माटी तुझे कुछ और भी दें।

गान अर्पित, प्राण अर्पित, और रक्त का कण-कण समर्पित।

चाहते हैं मेरे देश की माटी तुझे कुछ और भी दें।

आइए, आज इन राष्ट्रविरोधी ताकतों से लड़ने के लिए हम सब एकजुट होकर भारत माता की रक्षा के इस यज्ञ में अपनी आहुति दें। अपने विचार, मतभेद, स्वार्थ और संकीर्णताओं को भुलाकर, देशहित को सर्वोपरि रखें। यही समय है जब हम दुनिया को दिखा सकते हैं कि भारतीयता की जड़ें कितनी गहरी और मजबूत हैं।

भारत माता की जय!

डॉ. नीलम कुमारी

ISSN No. 2581-3528

नागरिक कर्तव्य की अनूठी मिसाल सोफिया कुरैशी

डॉ. नीलम कुमारी
एसोसिएट प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग
किसान पी.जी. कॉलेज, सिंभावली (हापुड़)

रणचंडी की अतृप्त प्यास, मैं दुर्गा का उन्मत्त हास!

संकल्प, सामर्थ्य और समर्पण की प्रतिमूर्ति, शब्दों में शौर्य, दृष्टि में विजय, यही है आज की भारतीय नारी। आज भारतीय नारी ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी प्रतिमा का लोहा मनवाया है और ऑपरेशन सिंदूर इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

जिस प्रकार देवासुर संग्राम में मां दुर्गा ने रणचंडी बन दुष्टों का संहार किया था उसी प्रकार भारत पाक युद्ध में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही कर्नल सोफिया कुरैशी व व्योमिका सिंह ने पाकिस्तान को मुंहतोड़ जवाब दिया है। इसलिए ऑपरेशन सिंदूर में कर्नल सोफिया कुरैशी और विंग कमांडर व्योमिका सिंह की भूमिका को लेकर महिलाएं गर्व का अनुभव कर रहीं हैं। उन्होंने कहा कि एक महिला ही अपने सिंदूर की रक्षा कर सकती है। गर्व हो भी क्यों ना इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब-जब देश पर मुसीबत आयी है तब-तब महिलाओं ने राष्ट्रधर्म निभाया एवं अपने नागरिक कर्तव्यों का पूरी निष्ठा एवं ईमानदारी के साथ पालन किया है। ऐसी ही नागरिक कर्तव्य की अनूठी मिशाल के रूप में उभरी कर्नल सोफिया कुरैशी पर न केवल उनके परिवार को बल्कि सम्पूर्ण महिला शक्ति व भारतवासियों को गर्व है। भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी को कोटि-कोटि धन्यवाद कि उन्होंने कर्नल सोफिया कुरैशी व व्योमिका सिंह को ऑपरेशन सिंदूर की अगुवाई करने का अवसर प्रदान किया। साथ ही सोफिया कुरेशी ने भी यह साबित कर दिया कि उनका राष्ट्रधर्म किसी भी धर्म व जाति से बड़ा है। वह पहले एक भारतीय है बाद में एक मुसलमान।

सोफिया के पिता ताज मुहम्मद कुरैशी ने अपनी बेटी की उपलब्धियों पर अत्यन्त गर्व व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि, 'हम हिंदू या मुसलमान होने से पहले भारतीय होने पर गर्व करते हैं। मेरी बेटी हमेशा देश की सेवा करने का सपना देखती थीं और आज उसने अपना सपना सच कर दिखाया।'

7 मई 2025 जब भारतीय वायुसेना ने ऑपरेशन सिंदूर के तहत पाकिस्तान के प्रतिबंधित आतंकवादी संगठनों जैश ए मोहम्मद, लश्कर ए तैय्यबा और हिजबुल मुजाहिदीन के नौ आतंकवादी ठिकानों पर हमला किया, जिसमें कई आतंकवादी मारे गये।

इस ऑपरेशन सिंदूर के बारे में सेना ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर सारी जानकारी कर्नल सोफिया कुरैशी और विंग कमांडर व्योमिका सिंह ने दी थीं। जिसके बाद अब हर कोई जानना चाहता है कि कर्नल सोफिया कुरैशी और विंग कमांडर व्योमिका सिंह कौन है उनकी उपलब्धियां क्या है। भारतीय सेना में जहां आज तक महिलाओं को कोई प्रमुख स्थान नहीं दिया गया गया वहीं कर्नल सोफिया कुरैशी ने यह साबित कर दिया दिया है कि किसी भी कार्य को करने के लिए दृढ़ इच्छाशक्ति वीं योग्यता की आवश्यकता होती है लिंग आधारित कलुषित मानसिकता की नहीं अतः आज यह जानना नितांत आवश्यक हो जाता है कि कर्नल सोफिया कुरैशी की जीवन

यात्रा में वो कौन सा मोड आया जिसने उन्हें देश सेवा की और अग्रसर कर दिया। आइए जानते है सोफिया कुरैशी की जीवन कहानी के बारे में।

यह कहानी है सोफिया कुरैशी की जिन्होंने भारतीय सेना में भारतीय महिलाओं की भूमिका को पुनः परिभाषित किया है यह कहानी है उस साहसी व दृढ़ संकल्पी सैन्य कर्नल की जिसने उन सभी महिला अधिकारियों को स्मरण कराया जिन्होंने देश सेवा वीं राष्ट्र धर्म को सर्वोपरि रखा लेफ्टिनेंट कर्नल शुभा भट्ट जो कश्मीर में सीमा चौकी की कमान संभालने वाली पहली महिला है, कैप्टन दिव्या अजीत जो सुखोई 30 लड़ाकू विमान उड़ाने वाली पहली महिला बनीं, लेफ्टिनेंट जनरल हरीश दुआ जो सेना कोर की कमान संभालने वाली पहली महिला अधिकारी बनीं, विंग कमांडर अभिनंदा जिन्होंने बालाकोट हमले के दौरान लड़ाकू विमान उड़ाया। यह कहानी है उस मानवता की सच्ची पुजारिन की जिसने अपने सैन्य कर्तव्यों से हटकर अपने नागरिक कर्तव्यों को ऊपर रख खोए हुए बच्चे को उसकी मां से मिलवाकर न केवल राष्ट्र धर्म निभाती है बल्कि अपने नागरिक कर्तव्यों का पालन भी करती है।

कर्नल सोफिया कुरैशी भारतीय सेना में एक प्रतिष्ठित अधिकारी के रूप में अपनी ख्याति अर्जित कर रही हैं। आपके पिता का नाम ताज मुहम्मद कुरैशी व माता का नाम अमीना कुरैशी है आप एक ऐसे परिवार से आती है जिनकी सेना में गौरवपूर्ण पृष्ठभूमि है आपके पिताजी व दादाजी दोनों ने भारतीय सशस्त्र बलों में सेवा दी थीं उनकी सेवा से प्रेरित होकर व खुद की पहचान बनाने हेतु आपने अपना अध्यापन कार्य छोड़कर भारतीय सेना में जाने का निर्णय लिया। आपकी उपलब्धियां अद्भुत दृढ़ संकल्प, अनुशासन व देश सेवा के प्रति गहरी प्रतिबद्धता का परिणाम है।

सैन्य संचार और साइबर युद्ध के विशेषज्ञ के रूप में कुरैशी ने सशस्त्र बलों में लैंगिक बाधाओं को तोड़ने के साथ-साथ भारतीय सेना की तकनीकी क्षमताओं को आधुनिक बनाने में अग्रणी भूमिका निभाई है।

आपकी देशभक्ति दृढ़ संकल्प वो कौशल को देखकर आपके भाई संजय कुरैशी कहते है कि ' देशभक्ति हमारे खून में है।'

सोफिया कुरैशी की शादी भी भारतीय सेना में कार्यरत अधिकारी मेजर ताजुद्दीन कुरैशी से हुई है, जो मैकेनाइज्ड इन्फैंट्री में सेवारत हैं। दोनों का एक बेटा है। सोफिया के भाई मोहम्मद संजय कुरैशी बताते हैं कि सोफिया उनकी बेटी जारा के लिए भी प्रेरणा स्रोत हैं और जारा भी सेना में जाने का संकल्प ले चुकी हैं।

सोफिया ने बड़ौदा विश्वविद्यालय से साइंस संकाय से बीएससी (1992-1995) और बायोकेमिस्ट्री में एमएससी (1995-1997) की पढ़ाई पूरी की।

उन्होंने बायोकेमिस्ट्री में पोस्ट ग्रेजुएशन किया और 1999 में चेन्नई में ऑफिसर्स ट्रेनिंग अकादमी (OTA) से ट्रेनिंग लेने के बाद भारतीय सेना में लेफ्टिनेंट के रूप में शामिल हुईं।

सोफिया के पिता ताज मुहम्मद कुरैशी ने अपनी बेटी की उपलब्धियों पर अत्यन्त गर्व व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि, 'हम हिंदू या मुसलमान होने से पहले भारतीय होने पर गर्व करते हैं। मेरी बेटी हमेशा देश की सेवा करने का सपना देखती थी और आज उसने अपना सपना सच कर दिखाया।'

जब सोफिया को भारतीय सेना में शॉर्ट सर्विस कमीशन (SSC) के माध्यम से चयनित होने का अवसर मिला, तो उन्होंने अपनी पीएचडी और अध्यापन करियर छोड़ दिया। वर्ष 1999 में वह सेना की सिग्नल कोर (Corps of Signals) में कमीशंड हुईं। उनके इस फैसले ने न केवल उनके परिवार को बल्कि देशभर की युवतियों को प्रेरित किया।

सोफिया कुरैशी को सेना में कई महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां निभाने का अवसर मिला।

वर्ष 2006 में उन्होंने संयुक्त राष्ट्र शांति रक्षक मिशन (UN Peacekeeping Operations) के तहत कांगो में छह वर्ष तक सेवा दी। वहां उन्होंने मल्टीनेशनल आर्मी के साथ मिलकर महिलाओं और बच्चों की सुरक्षा से जुड़े कार्यों में अहम भूमिका निभाई।

2016 में वह Force 18 नामक बहुराष्ट्रीय सैन्य अभ्यास में भारतीय सैन्य टुकड़ी का नेतृत्व करने वाली पहली महिला अधिकारी बनीं। इस अभ्यास में 18 देशों ने भाग लिया जिनमें भारत, जापान, चीन, रूस, अमेरिका, कोरिया, ऑस्ट्रेलिया आदि शामिल थे।

इस अभ्यास का आयोजन 2 से 8 मार्च 2016 के बीच पुणे में हुआ था और सोफिया उस अभ्यास में भारतीय टुकड़ी की कमांडर बनने वाली एकमात्र महिला थीं।

कर्नल सोफिया को उत्तर-पूर्व भारत में बाढ़ राहत कार्यों में उत्कृष्ट योगदान के लिए सिग्नल ऑफिसर-इन-चीफ का प्रशंसा पत्र प्राप्त हुआ था। उनके परिवार ने हाल ही में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित की, जिसमें समर्पण और त्याग से भरी उनकी यात्रा के बारे में बताया गया।

उनके भाई मोहम्मद संजय कुरैशी ने कहा, 'मेरे दादाजी भारतीय सेना में सेवारत थे, मेरे पिता भी सेना में थे और सोफिया ने उस विरासत को आगे बढ़ाया।' कुरैशी ने आगे बताया, 'मेरी दूसरी बहन साइना कुरैशी भी सेना में शामिल होने के लिए उत्सुक थीं, लेकिन कम वजन के कारण वह इसमें शामिल नहीं हो सकीं।'

सोफिया के जीवन में आए एक महत्वपूर्ण मोड़ पर विचार करते हुए उन्होंने कहा, 'पीएचडी की पढ़ाई के दौरान सोफिया ने भारतीय सेना के शॉर्ट सर्विस कमीशन का विज्ञापन देखा जिसमें महिलाओं को अस्थायी कमीशन देने की पेशकश की गई थीं। पीएचडी अधूरी छोड़कर सिर्फ एक साल के बच्चे को छोड़कर उन्होंने देश सेवा को अपना कर्म चुना।

उन्होंने कहा कि देश के प्रति परिवार का समर्पण जारी है- 'मेरी बेटी भी सेना में शामिल होने की तैयारी कर रही है।'

सोफिया कुरैशी के देश के प्रति समर्पण को

देखते हुए वो संयुक्त राष्ट्र शांति मिशन के लिए भारत द्वारा भेजी गई टीम की कमान संभाल रहीं हैं और उन्हें इसके प्रमुख प्रशिक्षकों में से एक के रूप में चुना गया है।

उनकी शांति यात्रा 2006 में संयुक्त राष्ट्र कांगो शांति मिशन के साथ शुरू हुई थी और पिछले छह वर्षों में उन्होंने शांति अभियानों (पीकेओ) में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

सोफिया ने ऑपरेशन पराक्रम (2001–02) के दौरान पंजाब सीमा पर कार्य किया, जिसके लिए उन्हें GOC–पद–C (जनरल ऑफिसर कमांडिंग इन चीफ) की प्रशंसा पत्र से सम्मानित किया गया।

पूर्वोत्तर भारत में बाढ़ राहत अभियानों के दौरान संचार व्यवस्था में उत्कृष्ट योगदान के लिए उन्हें Signal Officer&in&Chief का commendation कार्ड भी मिला।

उनकी नेतृत्व क्षमता की सराहना लेफ्टिनेंट जनरल बिपिन रावत भी कर चुके हैं। 2016 में कर्नल कुरैशी बहुराष्ट्रीय सैन्य अभ्यासों में भारतीय सेना की टुकड़ी का नेतृत्व करने वाली पहली महिला अधिकारी बनीं। ये अभ्यास कोई छोटी उपलब्धि नहीं थी – आसियान देशों में शांति स्थापना और बारूदी सुरंगों को हटाने पर केंद्रित, इनके लिए उच्च स्तर की विशेषज्ञता और नेतृत्व की आवश्यकता थी। कर्नल कुरैशी ने सिर्फ भाग नहीं लिया; उन्होंने नेतृत्व भी किया। उन्होंने दिखाया कि भारत और विदेशों में सैन्य अभियानों में नेतृत्व लिंग से नहीं, बल्कि क्षमता से परिभाषित होता है।

उनके सबसे महत्वपूर्ण पलों में से एक 2016 के बहुराष्ट्रीय अभ्यास के समापन समारोह के दौरान आया, जब उनसे दल का नेतृत्व करने के बारे में पूछा गया। गर्व के साथ उन्होंने कहा, 'बेशक मुझे गर्व महसूस हो रहा है।' सशस्त्र बलों में युवा महिलाओं के लिए उनका संदेश स्पष्ट था– 'देश के लिए कड़ी मेहनत करें और सभी को गौरवान्वित करें।' अगली पीढ़ी की महिलाओं को प्रोत्साहित करते हुए उन्होंने यह भी साझा किया, 'सेना में शामिल हों।'

ऑपरेशन सिंदूर में कर्नल कुरैशी की भागीदारी और सैन्य प्रशिक्षण में उनके निरंतर योगदान ने भारत के सशस्त्र बलों के भविष्य को आकार देने में उनकी भूमिका को उजागर किया है। कुरैशी ने पश्चिमी मोर्चे पर साइबर–एकीकृत त्वरित तैनाती इकाई का नेतृत्व किया। उनकी यूनिट ने सैन्य संचार को सुरक्षित किया और रणनीतिक प्रणालियों पर साइबर हमलों को विफल किया। इस प्रकार अगर देखा जाए तो सोफिया कुरैशी भारत की सेना में महिलाओं की उभरती भूमिका का प्रतीक हैं। उन्होंने महिलाओं के लिए स्थायी कमीशन और एनडीए प्रवेश सहित नीतिगत परिवर्तनों को प्रभावित किया है। उन्हें आधुनिक युद्ध नेतृत्व का प्रतीक के रूप में भी माना जा रहा है। शांति मिशनों की कमान संभालने से लेकर ऑपरेशन सिंदूर का नेतृत्व करने तक कर्नल सोफिया कुरैशी की यात्रा, कौशल, दृढ़ संकल्प और सेवा द्वारा परिभाषित नेतृत्व ही नागरिक कर्तव्यों को परिभाषित करती एक शक्तिशाली मिशाल है। वह भारत की सेना में महिलाओं के लिए कहानी को फिर से लिख रही थीं। कई युवा महिलाओं के लिए, उनका शांत व्यवहार, स्पष्टता और नेतृत्व प्रेरणा का काम करेगा।

जैसे–जैसे महिलाओं की भूमिका का विस्तार होता जा रहा है, भारतीय सेना नेतृत्व में महिलाओं की बढ़ती मान्यता को और अधिक प्रतिबिंबित करती जा रही है। कर्नल कुरैशी की कहानी अभी भी आने वाली यात्रा की ओर संकेत करती है। जिसमें बहुत कुछ हासिल किया जा चुका है और बहुत कुछ हासिल किया जाना बाकी है। कर्नल सोफिया कुरैशी की जीवन कहानी सम्पूर्ण महिला जाती के लिए संदेश देती नजर आती है कि–

आया समय उठो तुम नारी।
युग निर्माण तुम्हे करना है।।
आजादी की खुदी नींव में।
तुम्हे प्रगति पत्थर भरना है।।
अपने को कमजोर न समझो ।
जननी हो संपूर्ण जगत की ।।
आहट हो स्वर्णिम भारत की।
तुम्हें नया इतिहास देश का अपने कर्मो से रचना है।।

■

कर्नल सोफिया कुरैशी भारतीय सेना में एक प्रतिष्ठित अधिकारी के रूप में अपनी ख्याति अर्जित कर रही हैं। आपके पिता का नाम ताज मुहम्मद कुरैशी व माता का नाम अमीना कुरैशी है आप एक ऐसे परिवार से आती है जिनकी सेना में गौरवपूर्ण पृष्ठभूमि है आपके पिताजी व दादाजी दोनों ने भारतीय सशस्त्र बलों में सेवा दी थी उनकी सेवा से प्रेरित होकर व खुद की पहचान बनाने हेतु आपने अपना अध्यापन कार्य छोड़कर भारतीय सेना में जाने का निर्णय लिया।

ISSN No. 2581-3528

समाज के पंच परिवर्तन

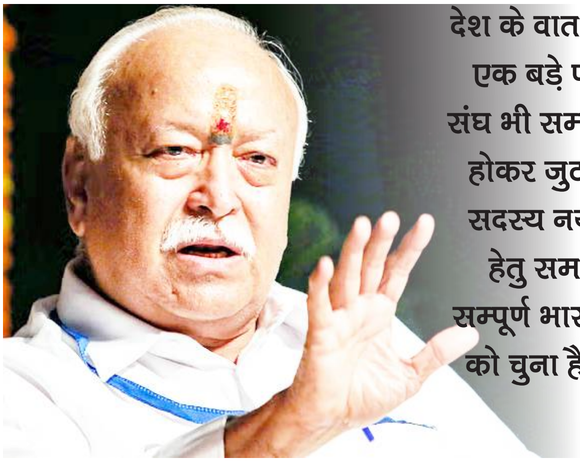

देश के वातावरण और वैश्विक परिदृश्य में भारत के प्रति सोच बदली है। देश एक बड़े परिवर्तन की बाट जोह रहा है। अपने शताब्दी वर्ष के अवसर पर संघ भी सम्पूर्ण ऊर्जा के साथ पुण्यभूमि भारत के उत्कर्ष के लिए संकल्पबद्ध होकर जुट गया है। संघ समाज का संगठन है इसलिए समाज का प्रत्येक सदस्य नये भारत के निर्माण के लिए संकल्पबद्ध हो, राष्ट्र के परम वैभव हेतु समाज के एक-एक सदस्य का योगदान हो, इसी दृष्टि से संघ ने सम्पूर्ण भारतीय समाज में आधारभूत परिवर्तन के लिए जिन पांच आयामों को चुना है वे हैं - 'स्व', सामाजिक समरसता, कुटुंब प्रबोधन, पर्यावरण और नागरिक कर्तव्य।

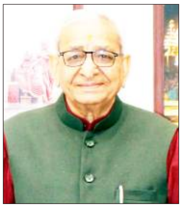

राम कुमार शर्मा
पूर्व प्रधानाचार्य, विद्याभारती

सामाजिक समरसता : राष्ट्र और समाज में विविधता होना सहज एवं स्वाभाविक है। विविधता में एकता के लिए एवं राष्ट्र की उन्नति के लिए सबको मिलकर कार्य करने की आवश्यकता है। हमारे खान–पान रहन सहन, भाषा, वेशभूषा अलग हो सकते हैं परन्तु जब राष्ट्र की बात आती है तो हम विविधता होते हुए भी एक साथ कार्य करें। एकता के लिए मन का भाव मिलना जरूरी है। समता लक्ष्य है, समता आधार है। व जन्म, वृत्ति रंग के आधार पर ऊँच–नीच, अगड़ा पिछडा यह भेद हमारे राम और कृष्ण ने भी कभी जाति के आधार पर भेद नहीं किया तो हम ऐसा क्यों कर रहे हैं। हमारे साधु सन्तों ने भी और गुरुओं ने भी शिक्षा और संस्कार प्रक्रिया में भेद नहीं माना तब हम लोग ऐसा व्यवहार क्यों कर रहे हैं! समाज में सामाजिक समरसता की भावना जगी, मन्दिरों, गांव, कुआँ, वेदों का पठन पाठन, स्पर्शबंदी आदि बहुत सी कुप्रथा पनपाने का कार्य विदेशी आक्रान्ताओं द्वारा रख समाज को कमजोर करने वाले विचार पनपाये गये जिससे सामाजिक समरसता का भाव नहीं पनप सका। मन और हृदय से समरसता आती है। समस्त हिन्दू समाज देश है यह मानना, उसकी प्रगति मेरी भी प्रगति है। यह जानकर व्यवहार करना। ऊँच–नीच हुआ–छूत छोटा–बड़ा, अमीर गरीब का भाव त्यागकर हमारे स्वयं के आचरण से ही होगा।

कुटुम्ब प्रबोधन : वर्तमान समय में कुटुम्ब प्रबोधन व्यवस्था का हास होता दिखाई दे रहा है। संयुक्त परिवार कुटुम्ब परिवार, संस्कार, धर्म, संस्कृति हमारी पहचान रहीं है। परन्तु आज हमारी पीढ़ियाँ इन सबसे दूर होती दिखाई दे रही हैं। अतः अब इस और प्रयास करने की आवश्यकता है। परिवार की दिनचर्या का विकास करना जिसमें अपने घर में परिवार के साथ सत्संग करना। कुटुम्ब, मित्र बनाना। भोजन, भजन, भ्रमण, संवाद, भाषा, भूसा में परिवर्तन करना। इन सब बातों की शुरुआत हमें स्वयं के परिवार से शुरू करनी होगी। परिवार के लोगों का एक साथ बैठकर भोजन, भजन, भ्रमण, वेशभूषा, बातचीत के द्वारा प्रयास करके वातावरण बनाना। अपने परिवार में संयुक्त का वातावरण बनाकर हम अपने परिचित स्वयंसेवकों, परिचितों को प्रेरित कर परिवर्तन ला सकते हैं। अपने स्वयं के तथा परिचितों के परिवारों में परिवर्तन कर हम उनके आस–पास निवास कर रहे परिवारों में भी कुटुम्ब प्रबोधन का सतत प्रयास करें। हमें अपने परिवारों, परिचितों तथा परिचितों के आसपास वाले परिवारों के साथ मिलकर होली, दीपावली सुन्दर कांड, स्वदेशी वस्त्र पहिनना आदि कार्यक्रम सामूहिक रूप से मनाने पर संस्कृति और संस्कार बचेंगे।

पर्यावरण: पर्यावरण के संदर्भ में गत दो दशकों से राष्ट्रीय अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर चिन्तन चल रहा है। देश भर में हम प्रकृति

ISSN No. 2581-3528

असंतुलन एवं जलवायु परिवर्तन का अनुभव कर रहे हैं। इन सब परिवर्तनों का सम्बन्ध मनुष्य से ही जुड़ा हुआ हैं। आँधी, तूफ़ान, बाद, भूस्खलन आदि प्रकृति का दोहन होने के कारण यह समस्यायें होती जा रही हैं। मनुष्य के द्वारा, पेडों का कटान, खनन भवन निर्माण आदि के माध्यम प्रवृत्ति के साथ जीवन का सन्तुलन बिगड़ रहा है। हमारी जीवन शैली में यदि परिवर्तन नहीं आया तो इसका समाधान होना असम्भव सा लगता है।

गन्ध युक्त पृथ्वी, रसयुक्त जल, स्पर्शयुक्त वायु सभी मेरे प्रातरू को मंगलमय करें यह तभी संभव होगा जब हम प्रकृति का शोषण. दोहन सीमित और संतुलित मात्रा के अनुरूप करेंगे।

जल, जमीन, जंगल, प्लास्टिक के उपयोग में सचेत होने पर ही हम पर्यावरण का संरक्षण करने की दिशा में अग्रसर हो सकेंगे।

जल संरक्षण आज की महती आवश्यकता है।

अन्यथा इसके अभाव में वैश्विक युद्ध जल को लेकर हो सकता है। अतः एक एक बूँद पानी का संरक्षण आवश्यक है।

वृक्षारोण का महत्व पर्यावरण को शुद्ध बनाये रखने हेतु अत्यावश्यक है। अतः अधिकाधिक लोगों को पीपल, बरगद नीम, इमली बेल आदि लगाने से पर्यावरण संरक्षित होगा! अपने आस पड़ोस का वातावरण स्वच्छता शुद्ध बनाये रखने हेतु लोगों को वृक्षारोपण हेतु प्रेरित करने की आवश्यकता है। नदियों का जलस्वच्छ बनाये रखने हेतु नदियों को स्वच्छ रखने के प्रयास हों। घर परिवारों को हरित बनाने का प्रयास सार्वजनिक स्थल, शाखा स्तर पर पर्यावरण को संरक्षित रखने हेतु हम क्या–क्या प्रयास कर सकते हैं पर चर्चा वार्ता कर प्रेरित करना।

स्वदेशी : स्वदेशी भाव का जागरण एक पुनीत कार्य है यह केवल अर्थ से जुड़ा विषय नहीं है! माता पिता मित्र. भाई रिश्तेदार, (पृथ्वी आकाश वायु, जल, अग्नि ये पंच महाभूतों को मेरा प्रणाम है। मेरा अपना देश आत्म निर्भर, स्वावलम्बी बने इस हेतु हमें कुटीर, ग्रामीण कृषि आदि कार्यों को बढ़ावा देने से ही हम स्वदेशी का भाव लोगों के अन्दर भर सकते हैं।

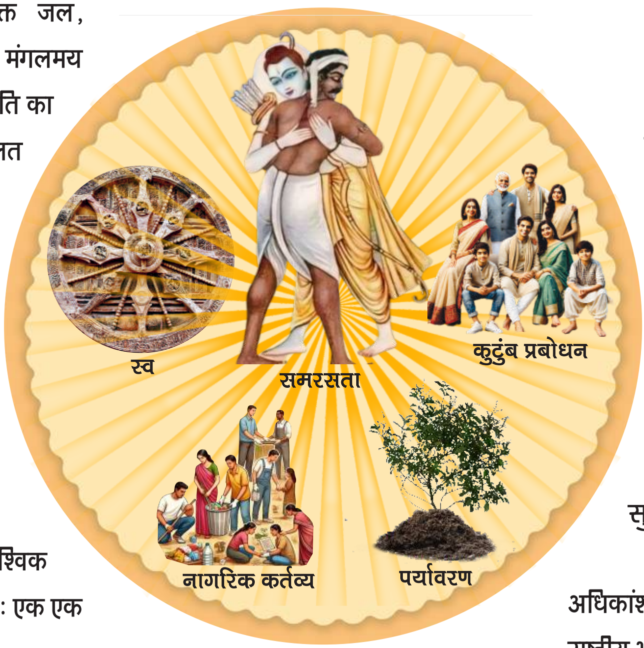

घर, विद्यालय, परिवार और समाज में स्वदेशी वस्तुओं का आग्रह करें चर्चा करें, देश मे निर्मित सामग्री हम अपने जीवन में प्रयोग कर स्वदेशी का भाव जन–जन तक पहुँचायें और अपनायें विदेशी सामग्री का त्याग कर स्वदेशी वस्तुओं का भरपूर उपयोग करें ऐसे भाव लोगों को समझाने का प्रयास हो। आज अधिकांश लोग विदेशी सामग्री खान–पान की वस्तुएँ वस्त्र साज–सज्जा सामग्री खेल खिलौने आदि की ओर आकर्षित होते दिखाई देते हैं। इन सब से मोह भंग करने हेतु स्वदेशी वस्तुओं की गुणवत्ता, आदि चीजों की ओर ध्यान देकर राष्ट्रीय भाव जाग्रत करने की दिशा में हम सभी प्रयास करें।

नागरिक कर्त्तव्य : वर्तमान समय में नागरिक कर्तव्य का पालन ही सच्ची देशभक्ति है। केवल वातों से नहीं अपितु कृति से अपने नागरिक कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन करें तभी हम राष्ट्र निर्माण की दिशा में एक श्रेष्ठ नागरिक कहलाने के सही अर्थो में अधिकारी हैं। इसीलिये गीत की निम्न पक्तियों में कहा गया है कि –

जियें देश हित, मरें देश हित
तिल–तिल कर गल जाना सीखें

व्यक्ति अधिकारों की बात तो करता है परन्तु देश, समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को भूल जाता है।

राष्ट्र की सम्पत्ति को नुकसान करना हमारा अधिकार नहीं है बल्कि हमारा व्यवहार घर, कार्यालय, बस ट्रेन, दुकान आदि पर एक सभ्य समाज के नाते होना चाहिये। हमें समाज को संघटित एवं सुसंस्कारित बनाना है।

आज राष्ट्रीय सम्पत्ति का अधिकांश मात्रा में नुकसान कुसंस्कारों, राष्ट्रीय भावों का अभाव के कारण हो रहा है। न राष्ट्रीय गान, न राष्ट्रीय आदि का सम्मान किया जा रहा है।

मातृभूमि के लिये हमारा व्यवहार कैसा हो ? उसके प्रति संवेदना कैसी हो पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

देश की रक्षा करें और आहवान किये जाने पर राष्ट्रीय सेवाए प्रदान करें !

प्राकृतिक पर्यावरण को संरक्षित रखें। सार्वजनिक सम्पत्ति की सुरक्षा करें, और अधिकारों पर बल न देकर देश की संप्रभुता और अखण्डता की रक्षा कर अपना कर्तव्य निभायें।

■

ISSN No. 2581-3528

राष्ट्र धर्म की अद्भुत मिशाल आकाश पुत्री विंग कमांडर व्योमिका सिंह

डॉ. कामिनी चौहान
असिस्टेंट प्रोफेसर, झम्मनलाल पीजी कॉलेज
हसनपुर, अमरोहा

राष्ट्र धर्म की अद्भुत मिशाल आकाश पुत्री व्योमिका सिंह का जन्म 10 मई 1990 को लखनऊ में हुआ था। उनका नाम व्योमिका जिसका अर्थ है 'आकाश में रहने वाली' या 'आकाश की पुत्री' जो उनके करियर से मेल खाता है। उनके पिता का नाम श्री आर एस निम और माता का नाम श्रीमती करुणा सिंह है जो सेवानिवृत्त शिक्षिका हैं। यह आकाश पुत्री 18 दिसंबर 2004 को भारतीय वायु सेवा की फ्लाइंग ब्रांच में हेलीकॉप्टरों का संचालन करते हुए 2500 से अधिक उड़ान घंटों का अनुभव प्राप्त है। 18 दिसंबर 2019 को इन्होंने फ्लाइंग ब्रांच से स्थाई कमीशन प्राप्त किया, जिसमें उन्हें दीर्घकालिक क्षमता में सेवा जारी रखने की अनुमति मिली। नवंबर 2020 में इन्होंने अरुणाचल प्रदेश में एक बचाव अभियान का नेतृत्व करते हुए दूर दराज के इलाकों में हवाई सहायता प्रदान की, इस ऑपरेशन में उन्होंने ऊंचाई, खराब मौसम और सीमित संसाधनों के बावजूद भी अपना उत्कृष्ट प्रदर्शन प्रदर्शित किया। 2021 में व्योमिका सिंह ने स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में मनाए गए आजादी के अमृत महोत्वस समारोह में हिमाचल प्रदेश के माउंट मणिरंग (21,625 फिट ऊंचाई) पर तीनों सेनाओं की सभी महिला पर्वतारोहण के साथ अभियान में भाग लिया।

22 अप्रैल 2025 को जम्मू कश्मीर के पहलगांव में हुए आतंकी हमले में जिसमें भारत के 26 लोग मारे गए थे, इसी आतंकी हमले के जवाब में भारतीय सेना ने 6 मई रात्रि 1.05 बजे से 1.30 बजे के बीच 'ऑपरेशन सिंदूर' चलाया जिसमें पाकिस्तान और पीओके में 9 आतंकी शिविरों को निशाना बनाया गया। इस ऑपरेशन की कमान विंग कमांडर व्योमिका सिंह, कर्नल सोफिया कुरेशी और विदेश सचिव विक्रम मिस्त्री को सौंपी गई। इस ऑपरेशन को अपने मुकाम तक पहुंचाने के लिए इन दोनों भारतीय शक्तियों ने अपनी शत प्रतिशत क्षमता को प्रदर्शितत किया और जब तक कोई आतंकी या पाकिस्तान कुछ समझ पाता तब तक यह भारत की बेटियां दुश्मन के 9 शिविरों को ध्वस्त कर चुकी थी, और पूरे विश्व को बता चुकी थी कि भारत की बेटियां भी वह जज्बा रखती हैं जो किसी भी मुश्किल परिस्थिति में अपने देश का सिर कभी नहीं झुकने देगी।

व्योमिका के माता–पिता के अनुसार वह हमेशा से आत्मविश्वास से भरपूर और संघर्षशील रही है। व्योमिका को हर कदम पर अपने माता–पिता का पूर्ण, समर्थन मिला है उनकी सफलता की कहानी एक संघर्षशील और सशक्त महिला की कहानी है, जो न केवल भारतीय सेवा के लिए गर्व का कारण बनी बल्कि उन सभी महिलाओं के लिए भी प्रेरणा है जो अपने सपनों को पूरा करने के लिए हर मुश्किल का सामना करती हैं। उनकी इन सभी उपलब्धियां से भारतीय नारी शक्ति और सशक्तिकरण को एक अहम बढ़ावा मिला है। भारतीय वायु सेना की विंग कमांडर व्योमिका सिंह उन प्रेरणादायक महिलाओं में से एक हैं जिन्होंने अपने सपनों को हकीकत में बदलते हुए देश की सेवा में खुद को समर्पित कर दिया है। व्योमिका सिंह ने अपने साहस, समर्पण और नेतृत्व क्षमता से भारतीय वायु सेना में तथा विश्व में एक अलग पहचान बनाई है और शौर्य का परचम लहराया है। ■

ISSN No. 2581-3528

नागरिक कर्त्तव्यों की सीख सिखा गया एक सच्चा बफादार भारतीय

डॉ. अंजुला
लेखक एवं वास्तु विशेषज्ञ

मौलिक अधिकारों के परे हमारे कुछ नागरिक कर्तव्य भी हैं। हमे आजादी यू ही नहीं मिली। आजादी को ना ही किसी सेना ने दिलाई और ना ही किसी दूसरे देश के मददगारों ने, आजादी मिली हमारे महापुरुषों के नागरिक कर्तव्यों की समझ, संघर्ष और बलिदान की वजह से। शायद उन सभी ने अपने कर्तव्य नहीं निभाये होते तो आज भी हम गुलामी की जंजीरों से स्वतंत्र नहीं हुए होते। हमें उन महापुरुषों के महान आदर्शों के पथ पर चलकर स्वयं एवं आने वाली पीढ़ियों को जागरूक करना होगा। हमें उन्हें बताना होगा कि हमें आजादी महापुरुषों एवं देश के हर नागरिक के पराक्रम और बलिदान की वजह से मिली। हमें अपने नागरिक होने के कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए सामाजिक समानता, अहिंसा, भाईचारा, आदर्श, पशु एवं पक्षियों के प्रति प्रेम, और राष्ट्रनिर्माण एवं सामाजिक सौहार्द कायम करना है, तथा साथ ही अपने आस पास हो रही अमानवीय, अवांछित गतिविधियों पर कड़ी नजर रख प्रसाशन को अवगत कराना है। जिससे किसी भी समस्या का हल सही समय पर कर लिया जाए और समाज में हो रही असामाजिक घटनाओं पर अंकुश लगाया जा सके। अभी हाल ही में हुए जम्मू कश्मीर के पहलगाम की आतंकी घटना ने सम्पूर्ण देश को ही नहीं अपितु पूरे संसार के सभ्य समाज को झकझोर कर रख दिया। घटना में हुए इस बड़े नरसंहार के दृश्य ने पूरी दुनिया को स्तब्ध कर दिया। इस घटना की जांच पड़ताल और विश्लेषण करने के बाद यह पता चला कि यदि पहलगाम के टूर ऑपरेटरों ने टूरिस्ट पर्यटकों के आने की सूचना यहाँ के प्रशासन को पहले उपलब्ध करायी होतीं तो शायद प्रशासन वहाँ की सुरक्षा के लिए तैनात होता और इतनी बड़ी आतंकी घटना ना होती। सोशल मीडिया के माध्यम से घटना के दो दिन बाद पता चला कि एक पर्यटक महिला ने घटना से दो दिन पहले जिस तरह से अपने नागरिक कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए संदिग्ध गतिविधियों की जानकारी प्रशासन को फोन पर अवगत कराने की कोशिश की वह नागरिक कर्तव्यों की एक मिशाल है, लेकिन दुर्भाग्य देखिए कि लोकल सिस्टम की लापरवाही ने बिना उसकी पूरी बात सुने उस महिला का फोन काट दिया। यह कॉल यदि संज्ञान में ली गयी होती तो शायद इस नरसंहार को रोका जा सकता था। अब आपको बताते हैं पहलगाम के रहने वाले लोकल टूर गाइड और पोनी राइड ऑपरेटर सैयद आदिल शाह के साहस की जो लोगों की जान बचाने के लिए आतंकियों से निहत्था लड़ गया और अपने नागरिक कर्तव्य

धारा 370 के हटने के बाद घाटी में अर्थव्यवस्था की मजबूती, स्थिरता और विकास चरमपन्थी शक्तियों व पाकिस्तान को रास नहीं आ रहा था। कश्मीर में सामान्य हालात को देखकर पाकिस्तान स्तब्ध था। उसे समझ नहीं आ रहा था की वो क्या करे। पाकिस्तान की मौजूदा सरकार गरीबी और मँहगाई से जूझ रही आम जनता का ध्यान भटकाने में विफल हो रही थी। उसकी अपनी सरकार चलाने की नाकामी के मुद्दे वहाँ की आवाम का चर्चा का विषय बनते जा रहे थे।

ISSN No. 2581-3528

को निभाते हुए अपने प्राणों की आहुति दे दी। आदिल शाह ने निडरता के साथ आतंकियों से उनका हथियार छीनने की कोशिश की और कई लोगों की जान बचाने में सफल भी रहा। उसकी निडरता की वजह से कई टूरिस्ट वहाँ से बाहर निकल पाने में सफल हुए। लेकिन इस छीना झपटी में आतंकियों ने उसे गोली मार दी। पूरे भारत देश को आदिल की जाँबाजी पर गर्व है। दुनिया भर के सभ्य समाज ने आदिल शाह की सराहना की। वहीं इससे उलट पहलगाम का ही रहने वाला कातिल, देश का गद्दार आतंकी, आदिल हुसैन ठोकर एवं कुछ अन्य लोकल लोग आतंकियों के मददगार बने जिस वजह से आतंकी ऐसी वीभत्स घटना को अंजाम देने में कामयाब रहे। हमारा नागरिक कर्तव्य है कि हमें अपने आसपास रहने वाले ऐसे संदिग्ध लोगों को चिन्हित कर प्रशासन को सूचित करना चाहिए। जिससे आतंकियों को जड़ से खत्म किया जा सके। अगर पहलगाम के लोकल लोगों ने सैयद आदिल हुसैन शाह की तरह अपने नागरिक कर्तव्यों का पालन किया होता तो इतने बड़े नरसंहार से बचा जा सकता था। यह घटना सभ्य समाज के किए कलंक है।

पाकिस्तान की आवाम यह समझ चुकी है। अब पाकिस्तान की आर्मी और सरकार को लग रहा है ये मुद्दा उसके हाथ से छिनता जा रहा है और कभी भी देश विद्रोह और क्रांति की ओर जा सकता है। अपने अवाम का ध्यान गरीबी और भुखमरी से हटाने के लिए पाकिस्तान के आर्मी चीफ की बौखलाहट के षडयंत्रों की वजह से 26 पर्यटकों का नरसंहार हुआ।

धारा 370 के हटने के बाद घाटी में अर्थव्यवस्था की मजबूती, स्थिरता और विकास चरमपन्थी शक्तियों व पाकिस्तान को रास नहीं आ रहा था। कश्मीर में सामान्य हालात को देखकर पाकिस्तान स्तब्ध था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वो क्या करे। पाकिस्तान की मौजूदा सरकार गरीबी और मँहगाई से जूझ रही आम जनता का ध्यान भटकाने में विफल हो रही थी। उसकी अपनी सरकार चलाने की नाकामी के मुद्दे वहाँ की आवाम का चर्चा का विषय बनते जा रहे थे। पाकिस्तान की आवाम कश्मीर की तरक्की देख अपने हुक्मरानो को कोस रही थी और साथ ही मौजूदा भारतीय सरकार की तारीफ कर रही थी। वहाँ की सरकार जिस तरह से कश्मीर का मुद्दा उठाकर अपने देश के लोगों का ध्यान विकास के मुद्दों से भ्रमित करने की कोशिश कर रही थी अब उसे पता चल चुका है कि पाकिस्तान की आवाम यह समझ चुकी है। अब पाकिस्तान की आर्मी और सरकार को लग रहा है ये मुद्दा उसके हाथ से छिनता जा रहा है और कभी भी देश विद्रोह और क्रांति की ओर जा सकता है। अपने आवाम का ध्यान गरीबी और भुखमरी से हटाने के लिए पाकिस्तान के आर्मी चीफ की बौखलाहट के षडयंत्रों की वजह से 26 पर्यटकों का नरसंहार हुआ। काश आर्मी की वर्दी की भेष में असीम मुनीर जैसा भेड़िया अपने नागरिक कर्तव्यों को समझ पता तो शायद बेगुनाह पर्यटकों की जान बच जाती और साथ ही वह अपने देश को युद्ध, भुखमरी और बदहाली जैसे विनाशकारी स्थिति से बचा पाता।

कश्मीर के कई नागरिकों ने अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए पर्यटकों की मदद ही नहीं की बल्कि कई लोगों की जान भी बचाई। पाकिस्तान के हुक्मरानों को कश्मीर के भारतीय मुसलमानों से सीख लेनी चाहिए। ■

ISSN No. 2581-3528

नमन सिंदूर

राजपाल कसाना
स्वतंत्र लेखक

22 अप्रैल की ढ़लती शाम में जिस पहलगाम की बैसरन घाटी में पाक प्रायोजित आतंकवाद ने सांप्रदायिक घृणा और धार्मिक विद्वेष बढ़ाने के लिए नरसंहार किया, उससे न केवल भारतीय आवाम बल्कि पूरा विश्व दुखी और स्तब्ध था। प्रशासनिक चूक कहां हुई सवाल इसका नहीं, सवाल आवाम में यह उठा कि कब तक पाकिस्तान की इन नापाक आदमखोर नृंशस और बर्बर आतंकी करतूतों को झेलते रहेंगे। पूरा राष्ट्र एक साथ खड़ा हुआ और सरकार और सेना को राष्ट्र रक्षा, जन रक्षा और आतंकवाद को समूल उखाड़ने का समर्थन दिया और परिस्थिति के अनुसार निर्णय लेने का स्वतंत्र अधिकार दिया।

'कुछ तो लोग कहेंगे, लोगों का काम है कहना, छोड़ो कल की बातें।' अमर प्रेम फिल्म का यह गीत यही संदेश देता है कि युद्ध और प्रेम में आत्मालोचन कर स्वयं की अस्मिता गरिमा के अनुरूप हालातो और परिस्थितियों के अनुकूल गंभीर निर्णय लें। विगत दिनों में हमने मीडिया, सोशल मीडिया और जन संवादों में अनेकों तर्क वितर्क देखें सुने हैं। आरोप प्रत्यारोप राजनैतिक निष्ठाओं के आग्रहों के साथ उभरे और बरसाती बुलबुलों की तरह शून्य में विलय हो गए। सुखद यह रहा कि ना तो समाज में सांप्रदायिक घृणा विद्वेष या अनचाही घटनाऐं उभरी और ना ही दलों या संगठनों में लोग अपने कथनों में हदों से गुजरे। विश्व समुदाय भारत के पक्ष में मानवता की रक्षा में पुरजोर समर्थन देता दिखाई दिया। हां, आदतन विस्तारवादी नीतियों के आग्रहों से ग्रस्त कुछ राष्ट्र भारत के समर्थन में किंतु परंतु करते दिखाई अवश्य दिए। लाशों में व्यापार खोजने वाली, सत्ता खोजने वाली निंदनीय प्रवृत्तियाँ और मानवता विरोधी नीतियाँ सर्वत्र और सर्वकालिक हैं। एकजुट भारत का जनमानस उनकी चिंता नहीं करता। लगभग दो सप्ताह की भारत की जन बेचैनी को जब सुकून दे दिया जब 7 मई के प्रथम पहर में सेना ने

ISSN No. 2581-3528

पाकिस्तानी आतंक की गतिविधियों की 9 आतंकी पनाहगाहों को दो घंटे की एयर स्ट्राइक में ध्वस्त कर न केवल भारत के सैन्य कौशल का, सैन्य शक्ति का और स्वाभिमानी राष्ट्रीय संप्रभुता के सैनिक साहस का, राष्ट्र भक्ति का परिचय दिया है बल्कि इस राष्ट्रीय सोच का भी परिचय दिया है कि लोकतंत्र और जनतंत्र में विश्वास करने वाली भारत की नीतियां किसी राष्ट्र पर व्यर्थ युद्ध थोपना नहीं चाहतीं। वरना तो एल ओ सी पर रोजाना पाक द्वारा की जा रही उकसाने वाली गतिविधियों की आड़ में भारत युद्ध का बिगुल भी बजा सकता था। लेकिन भारत की मूल नीति जियो और जीने दो की रही है, विश्व बंधुत्व की रही है, कृण्वन्तो विश्वमार्यम की रही है। इसलिए वह युद्ध नहीं समाधान चाहता है, शांति चाहता है। हां, उसकी संप्रभुता पर कोई आंख उठाए तो वह कभी लाल बहादुर शास्त्री के जय जवान-जय किसान का स्वाभिमानी उद्घोष बन जवाब देता है। कभी इंदिरा गांधी का यह आवाहन कि मेरे खून की एक-एक बूंद इस देश की रक्षा की चिंगारी बन शत्रु को झुलस देगी और कभी अटल बिहारी वाजपेई की कारगिल में अनुगूंज बन विजय पताका फहराता है कि यज्ञ अधूरा युद्ध शेष है, नव दधीचि आगे आओ, निज हड्डियों का वज्र बनाकर शत्रु का काल बन जाओ। सेना के साहस, विवेक, निर्णय और कौशल को राष्ट्र लेखनी का पुनः पुनः नमन कि उसने मात्र 2 घंटे की अवधि में आतंक की 9 पनाहगाहों को और सैकड़ो आतंकी नर पिशाचों को उनके कुकर्मों की माकूल सजा दे दी, जिसके वह हकदार थे।

यहां भारत के स्वाभिमानी राष्ट्रवाद से एक निवेदन और की अटल बिहारी वाजपेई जी के उसे युगांतरकारी दृष्टि बोध से जुड़े की यज्ञ अधूरा युद्ध शेष है नव दधीचि आगे आओ का शांति से विश्लेषण करें। यज्ञ शांति, शक्ति और संतुलन का प्रतीक है, त्याग और संपन्नता का प्रतीक है, यज्ञ विध्वंश का नहीं सृजन का प्रतीक है। शांति सुरक्षा और प्रगति उन्नति की राहें युद्ध से नहीं संवाद और समझौते से होकर निकलती हैं। आज वैश्विक परिस्थितियां वैज्ञानिक प्रगति और आर्थिक उन्नति प्रगति और समृद्धि संपन्नता की पक्षधर हैं। मुट्ठी में बारूद भरकर कोई अहंकारी रावण न स्वर्ण लंका को बचा सकता है, न साम्राज्य को, न रक्ष संस्कृति को और न ही अजेय इंद्रजीत के पौरुष साहस को बचा सकता है। जिस नापाक पाकिस्तान ने आतंक को पनाह दी, सैन्य उन्माद को पनाह दी, सांप्रदायिक विद्वेष को सत्ता का हथियार बनाया, आज वह पंच नदों वाला आर्यावर्त का, स्वर्ण कटोरा वाला पाकिस्तान अपनी नीतियों के चलते ही बर्बादी के कगार पर खड़ा है। जबकि पाकिस्तान का आवाम सिंधु नदी के सतत प्रवाह सा प्रगति चाहता है, शांति चाहता है। उन्माद और जुनून जब राष्ट्र निर्माण की उत्तरदाई युवा पीढ़ी की रक्त धमनियों में नफरत का जहर बन बहता है, तो इसका संक्रमण युवा शक्ति की दिशा को विध्वंश और विनाश की ओर ले जाता है। भारत स्वामी दयानंद के सत्य और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का देश है। भारत विवेकानंद के शिकागो के बंधुत्व के उदघोष का देश है, भारत महात्मा गांधी के सत्य अहिंसा का देश है। भारत नेताजी सुभाष चंद्र बोस के खून के बदले आजादी पाने के जय हिंद उदघोष का देश है। भगत सिंह जैसे राष्ट्रभक्त क्रांति वीरों की इंकलाबी शाहदत का देश है। भारत मां पन्नाधाय के राष्ट्र रक्षा में ममता के अनुपम त्याग का देश है। भारत सर्वखाप की सैन्य शक्ति बन आत्मरक्षा में शस्त्र उठाने वाली राम प्यारी गुर्जरी और आशा त्यागी का, सेनापति योगराज पंवार, हरबीर गुलिया, धूला बाल्मिकी और देव पाल चौधरी की स्वाभिमानी सोच का और अद्‌भुत साहस का देश है। रामकृष्ण का यह देश अब्दुल हमीद के राष्ट्रीय शौर्य का भी देश है। हम सब मिलकर अपना राष्ट्र धर्म निभाएं। सेना और शासनिक निर्णय का समर्थन करें। हम लाल बहादुर शास्त्री के 1965 के नैनी जनसभा के उदघोष के आवाहन को अपना नागरिक दायित्व स्वीकार करें कि सीमा पर जवान सैनिक और खेत में किसान और देश के हर मोर्चे पर प्रत्येक नागरिक अपना कर्तव्य निभाकर स्वयं राष्ट्र धर्म निभाता है। हम एक हाथ में बलिदान का साहस शौर्य और शस्त्र रखें, लेकिन दूसरे हाथ में शांति संवाद और समझौते की संभावना का विवेक भी रखें। उत्तेजना से बचे, सनसनी से बचे क्योंकि ये दोनों ही एक निष्ठ संकल्प को, संयोजित शक्ति को और संगठित सामूहिक लक्ष्य को बाधित करती है।

जय जवान-जय किसान, जय भारत महान। ■

आज वैश्विक परिस्थितियां वैज्ञानिक प्रगति और आर्थिक उन्नति प्रगति और समृद्धि संपन्नता की पक्षधर हैं। मुट्ठी में बारूद भरकर कोई अहंकारी रावण न स्वर्ण लंका को बचा सकता है, न साम्राज्य को, न रक्ष संस्कृति को और न ही अजेय इंद्रजीत के पौरुष साहस को बचा सकता है। जिस नापाक पाकिस्तान ने आतंक को पनाह दी, सैन्य उन्माद को पनाह दी, सांप्रदायिक विद्वेष को सत्ता का हथियार बनाया, आज वह पंच नदों वाला आर्यावर्त का, स्वर्ण कटोरा वाला पाकिस्तान अपनी नीतियों के चलते ही बर्बादी के कगार पर खड़ा है।

ISSN No. 2581-3528

‘पंच परिवर्तन’ से समाज व राष्ट्र का निर्माण

नीता त्रिपाठी
स्वतंत्र पत्रकार

यह वर्ष संघ का शताब्दी वर्ष चल रहा है परिणाम स्वरुप राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपने राष्ट्र के अस्तित्व, अस्मिता तथा अखंडता के लिए राष्ट्र के जन-जन में व्यक्तिशः समूहशः और संस्थागत अनेक माध्यमों से ‘पंच परिवर्तन’ के विषयों को लेकर समाज के मध्य सामाजिक जागरण, राष्ट्रीय विकास हेतु चर्चा कर रहा है।

आज जब पूरी दुनिया भारतवर्ष की ओर आशा भरी नजरों से देख रही है तो हमारा भी यह दायित्व बनता है कि हम दुनिया की उम्मीदों, आशाओं को पूरा करें।

देश के उत्थान के लिए चलने वाली लगभग सभी प्रकार की गतिविधियों में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपना महत्वपूर्ण योगदान देता आ रहा है। इस लंबे कालखंड में अनेक महापुरुष अवतीर्ण हुए उनके कृतित्व से समाज जागा, समाज में एकात्मकता, देशभक्ति, समर्पण, आत्मविश्वास, अनुशासन तथा राष्ट्रीय एवं मानवीय गुणों का निर्माण हुआ।

विगत वर्षों में संघ कार्य का बहुआयामी विस्तार हुआ है। पूर्व में संघ के भूतपूर्व सरसंघचालकों एवं वर्तमान सरसंचालक के मानस का प्रतिफल यह है कि आज भारतवर्ष में बहुआयामी सकारात्मक परिवर्तन के अनेक प्रयोग प्रारंभ हुए हैं। उनके द्वारा किए गए अभूतपूर्व कार्य, अनेक घटनाएं, प्रयत्न, नव प्रयोग की जानकारी आज की पीढ़ी के लिए दिशा बोधक और प्रेरणादायी सिद्ध हो रहा है।

यह वर्ष संघ का शताब्दी वर्ष चल रहा है परिणाम स्वरुप राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपने राष्ट्र के अस्तित्व, अस्मिता तथा अखंडता के लिए राष्ट्र के जन–जन में व्यक्तिशः समूहशः और संस्थागत अनेक माध्यमों से ‘पंच परिवर्तन’ के विषयों को लेकर समाज के मध्य सामाजिक जागरण, राष्ट्रीय विकास हेतु चर्चा कर रहा है।

संघ के संस्थापक डॉक्टर केशव बलिराम हेडगेवार जी के दर्शन में ‘पंच परिवर्तन’ की भावना परिलक्षित होती है। उनका मानना था कि राष्ट्र के नवसृजन, नव संगठन, नवरचना में ‘पंच परिवर्तन’ का संदेश जितना कल प्रासंगिक था, उतना आज प्रबल है, और भविष्य में भी उत्तरोत्तर प्रभावकारी एवं प्रासंगिक होता जाएगा। डॉक्टर हेडगेवार के कार्यशैली के इतिहास में उनकी सोच एवं योजनाओं में पारिवारिक रचना, वंश, सामाजिक व आर्थिक दर्शन के रोचक एवं दिल दहलाने वाले प्रसंग देखने को मिलता है ।

व्यक्तिगत आचरण, सामाजिक समरसता, समजिक चेतना, शिक्षा–संस्कार सेवा–भाव अर्थ–आयाम जैसे विशिष्ट प्रश्नों पर डॉक्टर

ISSN No. 2581-3528

हेडगेवार का स्पष्ट एवं प्रगतिशील मत था।

समाज में सकारात्मक परिवर्तन को गति देने के उद्देश्य से तथा भारत को विकसित बनाने की दिशा में 'स्व' का बोध अर्थात् स्वदेशी योजनाएं एवं कंपनियां, आर्थिक विकास व विश्व अर्थव्यवस्था में बड़ी भूमिका निभा रही है। 'स्व' अर्थात स्वदेशी भावना को गति देते हुए संघ के द्वितीय सरसंघचालक गोलवरकर जी का मत था कि 'देश की जनता यदि आर्थिक संग्राम में देश को विजयी होना देखना चाहती है तो स्वदेशी वस्तु का अंगीकार करें।'

उद्योग, सहकारिता, कृषि, स्वदेशी आदि से राजनीतिक व सामाजिक जीवन के क्षेत्र में राष्ट्रीय प्रगति के अनुरूप संरचनाओं की राष्ट्रसंगत एवं व्यवहारिक रूपरेखा तैयार कर अपने कार्यशैली को दिशा दी जाए ।

इसके लिए श्री गुरु जी ने कतिपय विवेकी तथा दूर दृष्टा स्वयंसेवकों को विभिन्न क्षेत्रों में काम करने के लिए न केवल प्रोत्साहित किया अपितु सतत मार्गदर्शन भी किया।

अनेकानेक स्वयंसेवक को जिसमें पंडित दीनदयाल उपाध्याय, दत्तोपंत ठेगड़ी, लक्ष्मण राव ईमानदार जैसे चिंतकों के अभूत पूर्व कार्य से हम सभी परिचित हैं। पंडित दीनदयाल जी आग्रह पूर्वक कहते थे कि 'भारत के 'स्व' को जानना होगा, 'स्व' को जगाना होगा, 'स्व' को गौरवान्वित करना होगा। एवं 'स्व' को ही प्रतिष्ठित करना होगा। अर्थात भारत को हमें भारत की दृष्टि से देखना होगा।'

वर्तमान समय में इसी विचारधारा को अपना कर हम आत्मनिर्भर भारत बनने की कल्पना कर सकते हैं ।

आज समाज जब दिशाहीन हो रहा है तो समाज की दिशा व दशा में परिवर्तन हेतु संघ सामाजिक समरसता, एवं एकजुटता को बढ़ावा देने का कुशल प्रयास कर रहा है। संघ के अतुलनीय सरसंघचालक बालासाहेब देवरस ने अपनी व्याख्यान में कहा कि 'छुआछूत अपने समाज की विषमता का एक अत्यंत दुखद और दुर्भाग्यपूर्ण पहलू है'। समाज में बंधुत्व एवं सामाजिक एकजुटता का भाव जगाना बहुत जरूरी है हमें अपने वंचित, पीड़ित, शोषित, दुर्बल समाज से जुड़कर कार्य करने की आवश्यकता है।

हिंदुत्व चिंतन में सेवा ही समर्पण है सेवा

समाज में सकारात्मक परिवर्तन को गति देने के उद्देश्य से तथा भारत को विकसित बनाने की दिशा में 'स्व' का बोध अर्थात स्वदेशी योजनाएं एवं कंपनियां, आर्थिक विकास व विश्व अर्थव्यवस्था में बड़ी भूमिका निभा रही है। 'स्व' अर्थात स्वदेशी भावना को गति देते हुए संघ के द्वितीय सरसंघचालक गोलवरकर जी का मत था कि 'देश की जनता यदि आर्थिक संग्राम में देश को विजयी होना देखना चाहती है तो स्वदेशी वस्तु का अंगीकार करें।'

समाज का स्वभाव बनें जिससे समाज में समरसता का विकास हो। यही विचारधारा आज की सामाजिक आवश्यकता है।

सामाजिक समरसता को लेकर सरसंघचालक सुदर्शन जी की प्रतिबद्धता जग जाहिर है उन्होंने ने ही भारतीय या स्वदेशी चर्च की अवधारणा प्रस्तुत की उनके कार्यकाल में 'मुस्लिम राष्ट्रीय मंच' की स्थापना हुई राष्ट्र के उत्थान में संघ की यात्रा अविस्मरणीय रही है।

सरसंघचालकों की श्रेणी में अनुकरणीय सरसंघचालक राजेंद्र सिंह तोमर उर्फ 'रज्जू भैया' भी 'स्वदेशी' व ग्रामीण अर्थव्यवस्था के प्रबल समर्थक थे।

उनका मानना था कि गांव को भूख मुक्त, रोग मुक्त, बनाना है तो 'शिक्षा' को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए। उनके द्वारा किए गए नवाचार प्रयोग का अनुकरण आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में किया जा रहा है। जिन गांवों में देश की सबसे ज्यादा आबादी बसती है।

अपने शताब्दी वर्षों की यात्रा में संघ राजनीतिक क्षेत्र से दूर रहकर राष्ट्र निर्माण, राष्ट्र उत्थान, व्यक्ति निर्माण, व समाज के उत्थान हेतु सतत कार्य कर रहा है। संघ के वर्तमान सरसंघचालक मोहन भागवत जी ने अपनी व्याख्यान में कहां है कि 'आज हमारा भारतीय समाज जिन चुनौतियों का सामना कर रहा है उसमें पंच परिवर्तन के आधार पर उन प्रश्नों का समाधान किया जा सकता है'। आज हमारे समाज में मूल्य आधारित, संस्कारवान और सामूहिक भोजन व भजन करने वाले परिवार व कुटुंब की नितांत आवश्यकता है। इसके लिए परिवार नामक इकाई सुदृढ़ होना चाहिए। एक भी बीज बचा रहा तो पुनर्निर्माण हो जाएगा।

इस प्रकार संघ भारत की बात, भारत के तरीके से एवं भारतीय दृष्टिकोण को केंद्र में रखकर कार्य करता आया है और आज भी कर रहा है भविष्य में करने की योजना भी है अपनी प्राचीन संस्कृति एवं समृद्धि परंपराओं को बचाने में संघ अपने दायित्वों का निर्वाह प्रभावी रूप से करनी हेतु कृत संकल्पित है। ■

पर्यावरण संरक्षण में युवाओं के लिए प्रेरणादायक बनती फिल्में और डॉक्यूमेंट्री

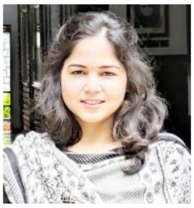

भावना भारद्वाज
शोध छात्रा, यूनिवर्सिटी स्कूल ऑफ मास कम्युनिकेशन, गुरु गोबिंद सिंह इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय, दिल्ली

बदलते जलवायु और उसके दुष्प्रभावों को देखते हुए बीते कुछ वर्षों में पर्यावरण संरक्षण पर चर्चा पूरे विश्व में तेज हो गई है, भारत भी पर्यावरण संरक्षण पर काम करने के लिए अग्रसर नजर आता है। वर्ष 2021 में हुए COP 26 में भारत ने वर्ष 2027 तक नेट जीरो के लक्ष्य को हासिल करने की ठानी है। इस लक्ष्य की प्राप्ति में देश के युवाओं की अहम भूमिका रहने वाली है। हमारे देश के युवा, माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के "विकसित भारत–2047" के लक्ष्य की प्राप्ति के एक मजबूत स्तंभ की भूमिका निभाने वाले है। युवा शक्ति और उनके विचार ही हमें इस लक्ष्य की प्राप्ति की ओर ले जाएँगे। आज का युवा सिर्फ स्कूलों और विश्वविद्यालयों की पढ़ाई तक ही सीमित नहीं है बल्कि पर्यावरण के प्रति भी गहरी जागरूकता रखता है। जिसमें उनका सबसे बड़ा प्रेरणा का स्त्रोत है फिल्में और डॉक्यूमेंट्री, जिसने युवाओं में पर्यावरण के प्रति एक नयी चेतना जागरूक की है।

पर्यावरण संरक्षण में आज के समय में सबसे बड़ी समस्या है देश में बढ़ता हुआ कचरा। जिसका अनुचित निपटान केवल वायु, मिट्टी, और जल को ही प्रदूषित नहीं करता बल्कि मानव स्वास्थ्य और जैव–विविधता के लिए भी हानिकारक है। रसायन, प्लास्टिक, इलेक्ट्रॉनिक, और अन्य हानिकारक पदार्थों का अत्यधिक उपयोग हमारे पर्यावण को दूषित कर रहा है। अगर हम कचरे का प्रबंधन सही तरीके से करें तो न केवल पर्यावरण को दूषित होने से बचाया जा सकता है बल्कि प्राकृतिक संसाधनों को भी बचाया जा सकता है।

आज का युवा जो देश का भविष्य है उसे कचरा प्रबंधन में जागरूक करना सबसे महत्वपूर्ण है। युवाओं में नयी ऊर्जा और उमंग होती है, जो पर्यावण संरक्षण के लिए बेहद जरूरी है। आज का युवा सिर्फ पढ़ाई तक ही सीमित नहीं रह गया है बल्कि वह देश के प्रति जिम्मेदारी का भाव भी रखता है। इस बदलाव में प्रेरणा का स्त्रोत फिल्में और डॉक्यूमेंट्री बन रही है, जो युवाओं को कचरा प्रबंधन करने और पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरित करती हैं।

हाल ही में मैंने दिल्ली के विश्वविद्यालयों में पढ़ने वाले युवाओं पर फिल्मों और डॉक्यूमेंट्रीज द्वारा उनकी जागरूकता और व्यवहार में होने वाले बदलावों पर अध्ययन किया। इस अध्ययन में पाया गया कि फिल्में और डॉक्यूमेंट्रीज युवाओं द्वारा कचरा प्रबंधन के तरीकों में सुधार ला रही हैं, इससे उनमे पर्यावरण के प्रति जागरुकता, और साथ ही पर्यावरण संरक्षण के प्रति सजगता बढ़ रही है। फिल्मों और डॉक्यूमेंट्रीज ने न केवल युवाओं को संवेदनशील बनाया है, बल्कि उन्हें विकसित भारत 2047 में पर्यावरण संरक्षण की प्राथमिकता के बारे में भी जागरूक कर रही है। आज की फिल्में और डॉक्यूमेंट्री न केवल मनोरंजन से भरपूर हैं साथ ही प्रेरणा का स्त्रोत भी बन रही हैं, इनसे युवाओं के ज्ञान में भी बढ़ावा हो रहा हैं। शोध में पाया गया कि युवाओं का मानना है कि सिर्फ आर्थिक और तकनीकी विकास ही आवश्यक नहीं है बल्कि हम सब को पर्यावरण संरक्षण की भी जिम्मेदारी लेनी होगी, क्योंकि यह हमें विकसित भारत की दिशा में लेकर जायेगा।

शोध में दिल्ली के युवाओं ने कई फिल्मों और डॉक्यूमेंट्रीज का जिक्र किया जिन्होंने उनपर असर डाला है। मिशन मंगल (Mission Mangal) जैसी फिल्में युवाओं को बहुत कुछ सिखाती और प्रेरणा का

स्रोत भी बन रहीं हैं। इस फिल्म में दिखाया गया है की प्लास्टिक को सही तरीके से कैसे इस्तेमाल किया जा सकता है। यह फिल्म युवाओं को सिखाती है कि प्लास्टिक अगर जिम्मेदारी से सोच समझकर इस्तेमाल किया जाये तो हमारे निजी जीवन में उपयोगी हो सकता है। साथ ही युवाओं ने डॉक्यूमेंट्रीज और सीरीज का भी जिक्र किया, उन्होंने गाजीपुर लैंडफिल (Ghazipur Landfill) डॉक्यूमेंट्रीज के बारे में बताया जिसने उन्हें न केवल दिल्ली के कूड़े के पहाड़ के बारे में जागरूक किया बल्कि युवाओं में देश को साफ़ रखने का भी बींज बोया। साथ में यह भी समझाया कि पर्यावरण को स्वच्छ रखना केवल सरकार की ही जिम्मेदारी नहीं हैं, हम सबका योगदान महत्वपूर्ण है। युवाओं ने बताया कि अपने स्कूलों, विश्वविद्यालयों, घरों, और कार्यस्थलों पर कचरा प्रबंधन करना बेहद आवश्यक है, जिसमें हमें गीले, सूखे, और हानिकारक कचरे का अलग-अलग प्रबंधन करना होगा। साथ ही हमें रीसाइक्लिंग (Recycling) और कम्पोस्टिंग (Composting) पर भी ध्यान देना होगा। जब तक हम ऐसा नहीं करेंगे तब तक बड़े बदलाव की उम्मीद रखना व्यर्थ है। जितना हो सके कचरे को घर में ही उपयोग में लाने की कोशिश करें जैसे गीले कचरे को गार्डनिंग में इस्तेमाल कर सकते हैं, प्लास्टिक कचरे को कबाड़ी वालों या फिर गैर-सरकारी संस्थानों को दान करें, हानिकारक कचरा या इलेक्ट्रॉनिक कचरे को भी गैर-सरकारी संस्थानों को दें, और बाकी जो सूखा कचरा है उसको सरकारी कचरे की गाड़ियों में डालें। जितना हो सके कचरे को खुद से ही सेग्रीगेट (segregate) करने की कोशिश करें ताकि पर्यावरण स्वच्छ रहे और हम भी विकसित भारत 2047 में अपनी भागीदारी निभाएं।

इसके साथ युवाओं ने डाक्यूमेंट्री सीरीज पर भी चर्चा की जिसमें उन्होंने History 101 और Buy Now जैसी सीरीज के बारे में भी बताया। जिसमें उन्होंने बताया कि प्लास्टिक का अंधाधुंध प्रयोग केवल व्यक्तिगत नुक्सान ही नहीं करता बल्कि पर्यावरण को भी हानि पहुंचा रहा है। युवाओं ने इन डाक्यूमेंट्रीज से सीखा कि हमें जिस चीज की सबसे अत्यधिक आवश्यकता हो वही खरीदना चाहिए क्योंकि जब हम आवश्यकता से अधिक वस्तुएं खरीदते हैं, उससे हम न केवल संसाधनों की बर्बादी करते हैं बल्कि पर्यावण को भी दूषित करते हैं। विकसित भारत 2047 का लक्ष्य तभी पूरा हो पायेगा जब हम अपनी आवश्यकता के अनुसार ही वस्तुओं को खरीदें और खपत में एक संतुलन बनायें, केवल उन्हीं उत्पादों का प्रयोग करें जो लम्बे समय तक चलें और पर्यावरण को नुक्सान न पहुंचाएं।

आज का युवा जो देश का भविष्य है उसे कचरा प्रबंधन में जागरुक करना सबसे महत्वपूर्ण है। युवाओं में नयी ऊर्जा और उमंग होती है, जो पर्यावण संरक्षण के लिए बेहद ज़रूरी है। आज का युवा सिर्फ पढ़ाई तक ही सीमित नहीं रह गया है बल्कि वह देश के प्रति जिम्मेदारी का भाव भी रखता है।

आज के डिजिटल युग में युवाओं को डिजिटल मीडिया प्लेटफार्म के माध्यम से अनेकों कहानियां पर्यावरण संरक्षण के बारे में जानने को मिल रहीं हैं। जो न केवल उनके ज्ञान को बढ़ा रहीं हैं बल्कि पर्यावरण के प्रति उन्हें और जागरूक और जिम्मेदार बना रहीं हैं। जिसकी वजह से युवा zero waste collection drive में बढ़ चढ़कर भाग ले रहे हैं और पर्यावरण को स्वच्छ रखने में अपना योगदान दे रहे हैं। साथ ही उन्होंने यह भी बताया की युवा अलग-अलग न्यूज के माध्यम से भी जानकारी लेते हैं जैसे पर्यावरण से जुड़ी कोई खबर डिजिटल न्यूज़ प्लेटफार्म पर है तो वह उसको पढ़ते हैं और उससे उन्हें बहुत कुछ सीखने को भी मिलता है। जिसे वह अपने परिवार, दोस्तों, और सहकर्मियों में भी साझा करते हैं। इसके साथ युवाओं ने बहुत सारी डॉक्यूमेंट्रीज के बारे में बताया जो डिजिटल प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध हैं, जिनको वह केवल देखते ही नहीं बल्कि उनसे काफी कुछ सीखते भी हैं और अपने निजी जीवन में अपनाते भी हैं।

विकसित भारत 2047 का सपना केवल अर्थव्यवस्था, ऊँची इमारतें और स्मार्ट शहर बनाना ही नहीं है, बल्कि पर्यावरण को स्वच्छ रखना, नदियों को साफ़ रखना, जंगलों को संरक्षित रखना, और अपनी भूमि को संजो कर रखना भी है। इस परिवर्तन में सबसे अहम भूमिका युवाओं की है जो इस देश का भविष्य हैं। युवा न केवल पर्यावरण पर केंद्रित फिल्मों और डॉक्यूमेंटरीज से प्रभावित हो रहे है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण के लिए उठ खड़े हो रहे है और बदलाव लाने की तरफ अग्रसर हो रहें है। आज का युवा गाजीपुर लैंडफिल (Ghazipur Landfill) और प्लास्टिक ओसियन (A Plastic Ocean) जैसी फिल्मों को देखकर न केवल खुद को बदल रहा है, बल्कि विकसित भारत 2047 के सपने को भी साकार करने में अपना योगदान देने को अग्रसर है। साथ ही युवाओं का मानना है कि इस तरह की और भी फिल्में और डॉक्यूमेंट्रीज बननी चाहिए जो डिजिटल मीडिया के माध्यम से युवाओं को जागरूक रखें और उनकी जिम्मेदारी के प्रति उन्हें जागरुक करें। सरकार ने दिशा दिखाई है और साथ ही संसाधन भी उपलब्ध कराये हैं अब देश के नागरिकों की बारी है खासकर युवाओं की कि वह अपने कार्यों और संकल्पों से विकसित भारत 2047 के लक्ष्य को गति दें और देश को स्वच्छ बनाये रखने में योगदान दें। युवाओं को यह भी समझना होगा कि विकसित भारत केवल सरकार की योजनाओं नहीं बल्कि आपकी हमारी सोच, कार्य और सही आदतों से बनेगा। ■

ISSN No. 2581-3528

जो कहा वो किया - ऑपरेशन सिंदूर

मृत्युंजय दीक्षित
लेखक एवं साहित्यकार

अप्रैल 22, 2025 पहलगाम में 26–निहत्थे निर्दोष हिन्दुओं की धर्म पूछकर हत्या से पूरा देश आहत था।दुख और क्रोध दोनों चरम पर थे। गृह मंत्री अमित शाह समाचार मिलते ही घटनास्थल पर पहुंच गए। प्रधानमंत्री अपनी विदेश यात्रा संक्षिप्त कर स्वदेश लौटे। अगले ही दिन मधुबनी रैली में घोषणा की, इस बार ऐसा दंड मिलेगा जिसकी उन्होंने कल्पना भी नहीं की होगी, इस संकल्प को उन्होंने अपने मन की बात कार्यक्रम में दोहराया। गृहमंत्री अमित शाह ने प्रधानमंत्री के संकल्प को बल देते हुए कहा, “हम एक–एक आतंकी को चुन–चुन कर मारेंगे” और अंत में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा था कि ये मेरा उत्तरदायित्व है कि देशवासी जो कुछ चाहते हैं वह सब कुछ मोदी सरकार में होकर रहेगा। इन वक्तव्यों के पीछे सरकार और सेना के सभी संकल्पबद्ध राष्ट्रभक्त सामरिक और रणनीतिक तैयारियां कर रहे थे।

पहलगाम की आतंकी घटना के पश्चात प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सेना को सही समय, सही स्थान और सही लक्ष्य चुन कर सटीक वार करने की छूट दे दी थी। भारतीय सेना ने 6–7 मई 2025 की मध्यरात्रि को अपने पराक्रम का प्रदर्शन करके हर भारतीय का मस्तक गर्व से ऊंचा कर दिया। आज हर भारतीय नागरिक अपनी सेना के साहस को प्रणाम कर रहा है और सेना के साथ खड़ा है। जैसे ही ऑपरेशन सिंदूर के सफलतापूर्वक लांच होने की सूचना आई रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने सोशल मीडिया पर लिखा “भारत माता की जय” और उसके बाद भारत ही नहीं अपितु पूरे विश्व में ऑपरेशन सिंदूर ट्रेंड करने लगा। भारत पाक सीमा तथा पीओके पर 9 आतंकी ठिकानों के तबाह होते ही देश के अनेक हिस्सों में उत्साह का वातावरण बन गया।

लम्बे विचार विमर्श और तैयारियों, कूटनीतिक पक्ष को साधने के साथ सटीक रणनीति का उपयोग करते हुए “आपरेशन सिंदूर” के माध्यम से भारतीय सेना ने पक्के सबूतों के साथ पाकिस्तान और गुलाम जम्मू–कश्मीर में स्थित आतंकी ठिकानों पर हमला कर उन्हें तबाह कर दिया। भारत ने पंजाब प्रांत के बहावलपुर जैश–ए–मोहम्मद के संस्थापक मसूद अजहर के ठिकाने पर जोरदार मिसाइल अटैक किया जिससे मसूद अजहर के परिवार के 10 सदस्यों के मारे जाने की खबर आ रही है।पाकिस्तानी सेना के चीन में बने एचक्यू–9 एयर डिफेंस सिस्टम को चकमा देते हुए भारतीय सेना ने 9 आतंकी ठिकानों को ध्वस्त करके भारत के सभी दुश्मनों को साफ संदेश दिया है कि अगर कोई उसे छेड़ेगा तो वह अब घर में घुसकर मारेगा। यह नया भारत है।

ISSN No. 2581-3528

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार देश के दुश्मनों को उसी भाषा में जवाब दे रही है जो भाषा वो समझते हैं। भारत को परमाणु हमले की धमकी देने वाले फिलहाल किसी बिल में छुपे हैं और अपने देशवासियों को कुछ बता पाने की स्थिति में ही नहीं रह गये हैं। जिन आतंकियों ने पहलगाम में निर्दोषों की हत्या करते समय उनकी पत्नियों या परिजनों से कहा था कि हम तुमको नहीं मारेंगे, जाओ मोदी को जाकर बता दो उनको प्रधानमंत्री मोदी ने बता दिया है कि वो सुन चुके हैं। उत्तर इतना तगड़ा और सधा हुआ दिया है कि आज पाकिस्तानी सत्ता प्रतिष्ठान, सेना व वहां की खुफिया एजेंसी आईएसआई हैरान हैं।

"आपरेशन सिंदूर" को मोदी सरकार में अब तक हुई स्ट्राइक्स में सबसे अलग माना जा रहा है। "आपरेशन सिंदूर" प्रधानमंत्री मोदी के उत्कृष्ट नेतृत्व का श्रेष्ठ उदाहरण है। यह आपरेशन बिना किसी दोष का अद्भुत प्रस्तुतीकरण रहा जिसमें आतंकी ठिकानों और आतंकवादियों को छोड़कर किसी भी निर्दोष नागरिक या पाक सेना के जवान को नुकसान नहीं पहुंचा और भारतीय सेना अपनी कार्यवाही को पूरा करके सकुशल घर वापस आ गई।

अब पाकिस्तान को यह समझ में नहीं आ रहा है कि वह पूरे घटनाक्रम पर क्या प्रतिक्रिया व्यक्त करे हालांकि पाक प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ की लंबी आपात बैठक के बाद पाक का बयान आया है कि उसे भारत पर जवाबी कार्यवाही करने का अधिकार प्राप्त है। पहलगाम घटना के बाद से पाकिस्तानी सेना एलओसी पर लगातार फायरिंग कर रही है जिसका भारतीय सेना भी पूरी बहादुरी के साथ लगातार जवाब दे रही है। भारत पाकिस्तान को लगातार चेतावनी दे रहा है कि एलओसी पर फायरिंग बंद करो नहीं तो इसके गंभीर परिणाम भुगतने के लिए तैयार रहो।

आतंकी ठिकानों पर हमले से आतंकी संगठनों की जड़ें हिलीं। भारत ने ऑपरेशन सिंदूर के अंतर्गत पाकिस्तान और पीओके में 9 आतंकी ठिकानो को तबाह कर दिया है। इसमें कम से कम 120 आतंकवादियों के मारे जाने की संभावना व्यक्त की जा रही है। यह संख्या बढ़ भी सकती है। पाकिस्तान केवल 26 लोगों के ही मारे जाने का दावा कर रहा है। माना जा रहा है कि इस हमले में सबसे अधिक नुकसान जैश–ए–मोहम्मद के संस्थापक मसूद अजहर को हुआ है और उसके परिवार के 14 सदस्यों को मार गिराया गया है।

"आपरेशन सिंदूर" के माध्यम से भारतीय सेना ने पक्के सबूतों के साथ पाकिस्तान और गुलाम जम्मू-कश्मीर में स्थित आतंकी ठिकानों पर हमला कर उन्हें तबाह कर दिया। भारत ने पंजाब प्रांत के बहावलपुर जैश-ए-मोहम्मद के संस्थापक मसूद अजहर के ठिकाने पर जोरदार मिसाइल अटैक किया जिससे मसूद अजहर के परिवार के 10 सदस्यों के मारे जाने की खबर आ रही है।

जिन 9 ठिकानों को निशाना बनाया गया, उनमें बहावलपुर का मरकज सुभान अल्लाह यह जैश–ए–मोहम्मद का प्रशिक्षण केंद्र है। 14 फरवरी 2019 को पुलवामा में हुए हमले में इस केंद्र की मुख्य भूमिका रही है। यहां जैश–ए–मोहम्मद के सरगना मौलाना मसूद अजहर अपने परिवार तथा सहयोगियों के साथ रहता था और आतंकियों को प्रशिक्षित कर उन्हें भारत भेजता था। दूसरा सबसे बड़ा हमला पंजाब के मुरिदके स्थित मरकजा तैयबा पर हुआ। यह लश्कर ए तैयबा का मुख्य प्रशिक्षण केंद्र है यहां आतंकियों को हर प्रकार से प्रशिक्षित किया जाता है। यहां पर हर वर्ष एक हजार छात्रों की भर्ती की जाती है ओसामा बिन लादेन ने यहां एक मस्जिद व गेस्ट हाउस के निर्माण में आर्थिक मदद की थी व 26/11 के मुंबई हमलावरों को प्रशिक्षित किया गया था। इसमें अजमल कसाब भी शामिल था। (पंजाब, पाकिस्तान) के नरावेल जिले में सरजाल तेहर कलां के शकरगढ़ में स्थित यह जैश–ए–मोहम्मद का लांचिंग पैड है। यह एक प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के रूप में में संचालित होता है यह सीमा से लगभग 6 किमी दूर है और यहां पर सुरंग निर्माण ड्रोन आदि का संचालन सिखाया जाता है ।

इसी प्रकार सियालकोट का महमूना जोया सेंटर इसका इस्तेमाल हिजबुल मुजाहिदीन करता है। बरनाला का मरकज अहले हदीस यह भी लश्कर के सेंटर है। कोटली का मरकज अब्बास भी एक मुख्य आतंकी केंद्र है जहां पर बड़े आतंकी सरगना घुसपैठ की योजना बनाते हैं और उन्हें सीमा पार कराने में मदद तक करते हैं। मुजफ्फराबाद का शावाई नाल्लाह कैंप भी एक बहुत बड़ा आतंकी शिविर केंद्र है। मुजफ्फराबाद में लाल किले के सामने स्थित यह जैश–ए–मोहम्मद का मुख्य केंद्र है यहां पर पाकिस्तानी सेना के रेंजर आतंकियों को प्रशिक्षण देते हैं। इन सभी केंद्रों पर किसी भी समय में 100 से 600 आतंकी रहते हैं।

आज यह सभी प्रशिक्षण केंद्र व लॉन्चिंग पैड ध्वस्त हो चुके हैं और पाकिस्तान में हाहाकार मचा हुआ है। भारतीय सेना का बदला पूरा हो जाने के बाद भारतीय सेना के इतिहास में पहली बार दो महिला अधिकारियों ने पूरे घटनाक्रम का पत्रकार वार्ता में विधिवत वीडियो जारी किया और ऑपरेशन सिन्दूर की पूरी जानकारी दी। ■

ISSN No. 2581-3528

सामाजिक दायित्वों और नागरिक कर्तव्यों के प्रति सजग दिखे गाजियाबाद के हाईराइज सोसाइटीज के लोग

डॉ. दीपा रानी
पोस्ट डॉक्टरल शोधार्थी

हर सोसाइटीज में एओए (AOA) की समिति बनाई गई है जो अपनी सोसाइटी की निजी परेशानियों के अलावा इन विषयों पर भी ध्यान दे रही है। नागरिक कर्तव्यों का बोध कराते गाजियाबाद सोसाइटीज के ये छोटे-छोटे प्रयास सराहनीय हैं जिसकी मदद से समाज के पशु पक्षियों को भी संरक्षण मिल पा रहा है।

कहते हैं बदलाव सृष्टि का नियम है। समाज निरंतर अपनी आवश्कताओं को परिस्थितिनुसार अवलोकन एवं उन्मूलन कर स्वयं एवं अपने समाज को उस दिशा में ढालने का प्रयास करता है। माना जाता है कि दुनिया में सनातन धर्म ही एक ऐसा धर्म है जिसमे मनुष्य सिर्फ समाज के निजी कर्तव्यों तक ही सीमित नहीं है बल्कि अपने आस पास रह रहे प्रत्येक जीव जंतुओं के प्रति भी संवेदनशील है। अपने निजी दिनचर्या से समय निकालकर वह अपने आसपास के जीव जंतुओं, पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों को संरक्षित कर रहा है। पिछले कई दशकों से यह अनुभव किया गया कि आधुनिकीकरण के दौड़ में सनातन धर्म के मूल कर्तव्य लुप्त होते जा रहे हैं जिसके फलस्वरूप भारतीय समाज अपने नैतिक कर्तव्यों से दूर होता जा रहा है। पश्चिमी विकास के मॉडल को अपनाने की होड़ में नई पीढ़ियां ना केवल सामाजिक कर्तव्यों और पर्यावरण के प्रति गैर जिम्मेदार हो रही हैं बल्कि अपनी पारिवारिक परंपराओं का भी छय कर रही हैं। लगातार बदलते परिवेश और नष्ट होते वातावरण का असर अब मानव समाज, जीवजंतुओं एवं प्राणियों पर दिखने लगा है। पिछले कई दशकों से उनके मानसिक तथा शारीरिक स्वास्थ्य में भी बड़ी गिरावट देखने को मिली है। बढ़ते प्राकृतिक प्रदूषण, छिन्न होते वातावरण, घटते पक्षियों की संख्या, बढ़ते मानवीय रोग तथा अन्य प्रकार की परेशानियों ने उसे प्रकृति के प्रति सचेत कराया जिसके फलस्वरूप अब लोग अपनी सनातन परंपराओं के आदर्शों को अपनाते हुए स्वयं के नैतिक कर्तव्यों के प्रति जागरूक होते दिख रहे हैं। इसके कई सुंदर उदाहरण गाजियाबाद के राजनगर एक्सटेंशन के कुछ हाई राइज सोसाइटीज में देखने को मिल रहे हैं। जब हमने यहाँ पर रह रहे कुछ निवासियों से बात की तो उन्होंने इसे स्वीकारा और कहा कि ये सच है कि वातावरण की स्थिति बहुत ख़राब हुई है, हवा में मानो जहर सा घुल गया है, लोगो को साँस लेने में दिक्कत हो रही है, नई उम्र के बच्चों में अस्थमा, सांस लेने की समस्या, फेफड़ों के ख़राब होने की रिपोर्ट आम हो गई है। जल प्रदूषण की भी समस्या बढ़ गई है। शुद्ध जल ना मिलने की वजह से लोगों में तरह तरह की बीमारियाँ हो रहीं हैं। पर्यावरण की समस्या की वजह से बहुत से पक्षी लुप्त होते जा रहे हैं। गर्मी

में पानी ना मिल पाने के कारण बहुत से पशुओं और पक्षियों का जीवन संकट की स्थिति में है। यहाँ के निवासियों का कहना है एक जिम्मेदार नागरिक होने के हमारे कुछ मानवीय कर्तव्य हैं, कि हम उनके लिए अपनी सुविधा अनुसार यथा संभव प्रयास करें तथा लोगों को इसके प्रति जागरूक करें। इन्हीं बातों को ध्यान में रख कर हम सभी सोसाइटी के कुछ निवासियों ने आपसी सहयोग लेकर निर्णय लिया कि हम सोसायटी के अंदर एवं बाहर चिड़ियों एवं जानवरों के खाने और पीने के कुछ स्थान बनायेंगे। और उन्होंने ऐसा किया भी। सोसाइटीज के बाहर जानवरो के लिए मिट्टी और सीमेंट से बने बर्तन रखें गए है ताकि रोड पर घूमते आवारा जानवरों को भी भोजन पानी मिल सके। सैफायर सोसाइटी में रहने वाली 'एनिमल वेलफेयर वालंटियर' निधि इन असहाय जानवरों की स्थिति बताते हुए भावुक हो जाती हैं और कहती हैं कि उन्हीं की सोसाइटी के कुछ गैर जिम्मेदार लोगों ने उन्हें रोकने का भी प्रयास किया और साथ ही न रुकने पर मारपीट की चेतावनी भी दी, परंतु वह अपने निर्णय पर अडिग रहीं एवं आज भी वह हर रोज कई गायों और कुत्तों को खाना खिलातीं हैं और साथ ही अपनी वित्तीय सुविधानुसार जानवरों को टीके और बीमार होने पर उनके इलाज के लिए डॉक्टरों की फीस का भी प्रबंध करती हैं। उनका कहना है समाज में जागरूकता पहले से बढ़ी है। कई सोसाइटी के लोग अब अपने कर्तव्यों को निभाते अपने खुद के पैसे से गायों, कुत्तों, पक्षियों के लिए भोजन पानी और उनकी बीमारी एवं टीके में लगने वाले खर्च का प्रबंध कर रहे हैं। कई सोसाइटीज में अब आपको पशु पक्षियों के लिए विशेष व्यवस्थाएं देखने को मिल जायेगी। कुछ सोसाइटीज तो साल के बारह महीने पशु–पक्षियों के लिए विशेष जल एवं भोजन हेतु समुचित स्थान बनाकर उनके स्वास्थ्य की रक्षा करने का प्रयास कर रही हैं। अमूमन हर सोसाइटीज में हरे–भरे पार्को की व्यवस्था की गई है जहाँ सुबह शाम योगाभ्यास करते सोसाइटीज के निवासियों के अलावा तरह–तरह के पक्षियों–गिलहरियों के भी कलरव सुनने को मिल जायेंगे।

कुछ सोसाइटीज तो साल के बारह महीने पशु-पक्षियों के लिए विशेष जल एवं भोजन हेतु समुचित स्थान बनाकर उनके स्वास्थ्य की रक्षा करने का प्रयास कर रही हैं। अमूमन हर सोसाइटीज में हरे -भरे पार्को की व्यवस्था की गई है जहाँ सुबह शाम योगाभ्यास करते सोसाइटीज के निवासियों के अलावा तरह तरह के पक्षियों -गिलहरियों के भी कलरव सुनने को मिल जायेंगे।

ऐसे छोटे–छोटे प्रयासों की मदद से अप्रैल–मई के भीषण गर्मियों में भी पशु पक्षियों का विशेष ध्यान रखा जाना संभव हो पा रहा है। सामाजिक चेतना के इन प्रयासों की मदद से नागरिक कर्तव्यों को बढ़ावा मिल रहा है। हर सोसाइटीज में एओए (AOA) की समिति बनाई गई है जो अपनी सोसाइटी की निजी परेशानियों के अलावा इन विषयों पर भी ध्यान दे रही है। नागरिक कर्तव्यों का बोध कराते गाजियाबाद सोसाइटीज के ये छोटे–छोटे प्रयास सराहनीय हैं जिसकी मदद से समाज के पशु पक्षियों को भी संरक्षण मिल पा रहा है। ऐसे प्रयासों को हर क्षेत्र में बढ़ावा मिलना चाहिए ताकि भारतीय सनातन परंपराओं के मूल्यों को पुनः स्थापित किया जा सके। ■

ISSN No. 2581-3528

भारत के वन मैन जादव पायेंग

डॉ. शिवा शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर – अंग्रेजी विभाग
झम्मन लाल पी.जी. कॉलेज, हसनपुर, अमरोहा

काम ऐसा करो कि पहचान बन जाए।
कदम ऐसा चलो की निशान बन जाए।।
जिंदगी तो सभी काट लेते है।
मगर जिंदगी ऐसी जियो कि मिशाल बन जाए।।

असम के माजुली में रहने वाले जादव मोलाई पायेंग के लिए प्रकृति और पर्यावरण ही जीवन है। जीवों के अस्तित्व और पर्यावरण संरक्षण के लिए जादव पायेंग 42 साल से पौधे लगा रहे है। उन्होंने अपने दम पर सैकड़ों एकड़ बंजर जमीन को वन में बदल दिया, इसलिए उन्हें भारत का फॉरेस्ट मैन भी कहा जाता है। 'भारत के वन पुरुष' के नाम से मशहूर जादव पायेंग ने अपने अनुयायियों को आकर्षित करने के लिए प्रतिदिन एक पेड़ लगाया और न्यूयॉर्क के सेंट्रल पार्क से भी बड़ा जंगल बनाया।

जादव पायेंग की कहानी सोलह वर्ष की छोटी उम्र से शुरू होती है, जब उन्होंने अपने परिवार के पशुधन को संभाला, और अधिक पशुधन खरीदा, और एक छोटा झुंड शुरू किया। उनके पिता ने उन्हें बताया कि जिस सूखी ब्रह्मपुत्र रेत पर वे रहते थे, वह उनके मवेशियों के गोबर से उपजाऊ हो जाएगी। वह सही था। प्रकृति के अलावा किसी और चीज की मदद के बिना, इस दूरदर्शी व्यक्ति ने अपने साधारण रेत के टीले से नाव द्वारा दूध लाकर बेचने का काम करके जीविका अर्जित की।

जब भी उसके पास कुछ अतिरिक्त पैसे होते, तो वह बांस और अन्य स्थानीय पौधे खरीदता और उन्हें अपने रेत के टीले पर प्यार से लगाता। कोई उसे बताता था कि अकेले पौधे जीवित नहीं रह पाएंगे, इसलिए, अविश्वसनीय रूप से, उसने मुख्य भूमि से चींटियों को अपने अपेक्षाकृत छोटे द्वीप पर ले जाना शुरू कर दिया। एक विशेष रूप से भयंकर बाढ़ के दौरान, पानी में बहकर आए 100 से अधिक साँप उसके द्वीप पर मर गए। आंसुओं से लथपथ, पायेंग ने फैसला किया कि वह अपने द्वीप को एक ऐसे आश्रय में बदल देगा जहाँ सभी जीव जीविका पा सकें। उनके प्रयासों का अंतिम परिणाम मुलाई कथोनी, या मुलाई का जंगल है, जहाँ सरीसर्पों के अलावा, सभी प्रकार के कीड़े, पक्षी और स्तनधारी, जिनमें गैंडे और बाघ शामिल हैं, सुरक्षित आश्रय पा चुके हैं। अब वह आदमी दिन में सिर्फ तीन घंटे सोता है, सुबह तीन बजे तक ऊनाचपोरी पहुँच जाता है, जंगल के बीच में अपने पशुओं के पास पाँच किलोमीटर पैदल या साइकिल से जाता है, जानवरों को साफ करता है, खिलाता है और दूध पिलाता है, पेड़ों की देखभाल करता है और अपनी जमीन की देखभाल करता है।

आज, कुछ लोग कहते हैं कि मुलाई को इस बात का जुनून है! सिर्फ अपने छोटे से जहाज को हरा-भरा करने से संतुष्ट न होकर, वह गाँव वालों को भी अपनी जमीन के एक हिस्से पर

ISSN No. 2581-3528

ऐसा ही करने के लिए प्रेरित करता है।

असम के 'फॉरेस्ट मैन' इस सबका श्रेय लेने से इनकार करते हैं। वे कहते हैं, 'यह सिर्फ प्रकृति की शक्ति है जिसने यह सब किया है।' जब सैंक्चुरी ने पूछा कि इतने सालों के बाद उन्हें क्या प्रेरित करता है, तो वे दार्शनिक हो गए, 'सर्दियों में एक कप चाय, जब झाओ घास कोहुआ फूलों की ताली के साथ नाचती है, वैगटेल इधर-उधर भागते हैं, ब्रह्मपुत्र के पानी की आवाज मेरे पैरों को छूती है और मेरी भैंसें सुबह की धूप में सुस्ताती हैं। प्रकृति के अलावा मुझे ऐसी दौलत कौन दे सकता है?'

पायेंग के अद्वितीय पर्यावरण सक्रिय को देखते हुए, उनके जंगल का सम्माननीय नाम 'मोलाई' रखा गया। उनकी प्रेरक कहानी बिहाइंड से परे चली गई, जिसने बच्चों की किताब 'जादव एंड द ट्री प्लेस' को प्रेरित किया।

पुरस्कार विजेता अजरबैजानों में उनकी यात्रा को पंजीकृत किया गया है, जो दुनिया भर के फूलों को फलते-फूलते मोलाई वन को देखने के लिए आकर्षित करते हैं। इसके अलावा, उनकी कहानी का एक अनमोल पाठ बनाया गया है, जिसमें अमेरिका और उनके विदेशी विद्वानों के पाठ्यक्रम शामिल हैं।

पायेंग के जीवन का काम एक हरे-भरे जंगल का निर्माण कहीं से भी आगे तक फैला हुआ है। उनके पेड़ कार्बन डाइऑक्साइड को नष्ट कर देते हैं, एक प्राकृतिक कार्बन डाइऑक्साइड के रूप में काम करते हैं, समग्र पिरामिड के तंत्र स्वास्थ्य में योगदान करते हैं, जैव विविधता का समर्थन करते हैं, जल चक्रों को विकसित करते हैं, और विभिन्न समुदायों के लिए आवश्यक आवास प्रदान करते हैं।

उनका पुनर्वनीकरण प्रयास जलवायु परिवर्तन के लिए एक ठोस और प्रभावशाली समाधान है। मोलाई वन इस बात का जीवंत उदाहरण है कि कैसे वैयक्तिक क्रियाएं मानवता और पर्यावरण के बीच एक नियति और सामुदायिक सह-अस्तित्व में योगदान दे सकती हैं।

जादव पायेंग की कहानी सोलह वर्ष की छोटी उम्र से शुरू होती है, जब उन्होंने अपने परिवार के पशुधन को संभाला, और अधिक पशुधन खरीदा, और एक छोटा झुंड शुरू किया। उनके पिता ने उन्हें बताया कि जिस सूखी ब्रह्मपुत्र रेत पर वे रहते थे, वह उनके मवेशियों के गोबर से उपजाऊ हो जाएगी। वह सही था। प्रकृति के अलावा किसी और चीज की मदद के बिना, इस दूरदर्शी व्यक्ति ने अपने साधारण रेत के टीले से नाव द्वारा दूध लाकर बेचने का काम करके जीविका अर्जित की।

जादव पायेंग असम के एक छोटे से गांव में रहते थे। 1970 के दशक में, उन्होंने ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे एक रेतीले इलाके में पेड़ लगाने का फैसला किया। शुरुआत में, लोगों ने उनके प्रयासों को हंसी में उड़ा दिया, लेकिन जादव ने हार नहीं मानी। उन्होंने लगातार पेड़ लगाए, उनकी देखभाल की और उन्हें बड़ा होने दिया।

आज, जादव पायेंग के प्रयासों से उस रेतीले इलाके में एक विशाल वन बन गया है, जिसे मोलाई वन के नाम से जाना जाता है। यह वन अब कई प्रजातियों के पौधों और जानवरों का घर है, जिनमें हाथी, गैंडे और बाघ शामिल हैं।

सम्मान और पुरस्कार : जादव पायेंग के इस अद्वितीय कार्य के लिए उन्हें कई पुरस्कार मिले हैं-

पद्म श्री (2015) : भारत सरकार द्वारा दिया गया चौथा सर्वोच्च नागरिक सम्मान।

'फॉरेस्ट मैन ऑफ इंडिया' (2012) : जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय द्वारा दिया गया सम्मान।

मानद डॉक्टरेट : असम कृषि विश्वविद्यालय और काजीरंगा वियवविद्यालय से।

जादव पायेंग का मानना है कि 'हम सभी जुड़े हुए हैं' और उनका जीवन इस सिद्धांत का प्रतीक है। वे अब भी मोलाई वन की देखभाल करते हैं और अन्य स्थानों पर भी वृक्षारोपण की योजना बना रहे हैं ।

उनकी कहानी न केवल असम, बल्कि पूरे भारत और दुनिया के लिए एक प्रेरणा है कि एक व्यक्ति की मेहनत और समर्पण से पर्यावरण में बड़ा परिवर्तन लाया जा सकता है।

जादव पायेंग की कहानी हमें सिखाती है कि एक व्यक्ति के छोटे से प्रयास से बड़ा बदलाव लाया जा सकता है। उनकी कहानी पर्यावरण संरक्षण और वनस्पति और जीव-जन्तुओं के संरक्षण के महत्व को उजागर करती है।

जादव पायेंग एक हीरो हैं और उन्हें इसका पता भी नहीं है। इसके लिए हम उनका सम्मान करते हैं । ■

ISSN No. 2581-3528

नई शिक्षा नीति के प्रकाश में चमकता एक आदर्श विद्यालय : कम्पोजिट विद्यालय बरहुआं

अमन दुबे (शोध छात्र)
यूनिवर्सिटी स्कूल ऑफ मास कम्युनिकेशन
गुरु गोबिंद सिंह इंद्रप्रस्थ विवि. दिल्ली

प्रधानमंत्री जी का सपना है कि 2047 तक भारत न केवल आर्थिक महाशक्ति बने, बल्कि सभी नागरिकों को समान अवसर प्रदान करने वाला समाज भी बने। इस दिशा में कम्पोजिट विद्यालय बरहुआं का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। विद्यालय को मिला विद्यालय राज्य पुरस्कार (₹1,20,000) न केवल एक सम्मान है, बल्कि एक प्रेरणा भी है।

जब संकल्प सशक्त हो, तो साधन अपने आप जुट जाते हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के 'विकसित भारत 2047' के स्वप्न की आधारशिला शिक्षा है – और इस स्वप्न को साकार करने की दिशा में गोरखपुर जनपद के पिपरौली ब्लॉक स्थित कम्पोजिट विद्यालय बरहुआं एक प्रेरणास्रोत बन चुका है। इस विद्यालय ने दिखाया है कि सरकारी शिक्षा प्रणाली में नवाचार, समर्पण और दूरदर्शिता के माध्यम से किस प्रकार अद्भुत परिवर्तन लाया जा सकता है।

शिक्षा का समग्र विकास : मंजूषा सिंह का नेतृत्व : विद्यालय की प्रधानाचार्या मंजूषा सिंह न केवल एक प्रशासक हैं, बल्कि एक संवेदनशील शिक्षाविद् भी हैं, जिनका लक्ष्य बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देना और उन्हें 21वीं सदी के वैश्विक नागरिक के रूप में तैयार करना है। उनकी देखरेख में विद्यालय में नित्य कक्षाएं संचालित होती हैं, मध्यान्ह भोजन योजना (MDM) कुशलता से क्रियान्वित होती है, और प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (DBT) के माध्यम से विद्यार्थियों के हितों की रक्षा सुनिश्चित की जाती है।

कक्षा 1 से 8 तक संचालित इस विद्यालय में 570 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं, जिनमें 291 लड़के और 279 लड़कियाँ हैं। इस विद्यालय में लड़कों और लड़कियों का अनुपात संतुलित होना ग्रामीण भारत की पारंपरिक सोच को चुनौती देता है। आमतौर पर गाँवों में बेटे निजी विद्यालयों में और बेटियाँ सरकारी विद्यालयों में भेजी जाती हैं, परंतु कम्पोजिट विद्यालय बरहुआं ने अपने उत्कृष्ट शिक्षण गुणवत्ता से इस मानसिकता को बदलने में सफलता पाई है। आज अभिभावक अपने बच्चों को गर्व से इस विद्यालय में भेजते हैं।

डिजिटल शिक्षा की ओर कदम : प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने बार–बार डिजिटल इंडिया की बात की है और कोविड–19 के कठिन समय में कम्पोजिट विद्यालय बरहुआं ने इस मंत्र को आत्मसात किया। महामारी के दौरान जब विद्यालय बंद थे, तब इस विद्यालय ने डिजिटल शिक्षण की राह चुनी। शुरुआती कठिनाइयों के बावजूद, शिक्षकों ने अभिभावकों को मोबाइल फोन के माध्यम से बच्चों को जोड़ने के लिए प्रेरित किया और अभिभावक उपयोग के लिए भी तैयार हुए।

जब कोविड के प्रतिबंधों में ढील दी गई और अभिभावक काम पर जाते समय मोबाइल फोन साथ ले जाने लगे, तब विद्यालय ने मोहल्ला कक्षाओं की शुरुआत की। इससे यह सुनिश्चित किया गया कि बच्चों की शिक्षा का क्रम न टूटे।

विद्यालय ने ReadAlong और Diksha जैसे शैक्षणिक ऐप्स का उपयोग कर डिजिटल शिक्षण को अपनाया। प्रारंभ में शिक्षकों ने अपने व्यक्तिगत मोबाइल फोनों से बच्चों को पढ़ाया, बाद में

ISSN No. 2581-3528

विद्यालय ने एक स्मार्ट टीवी भी स्थापित किया। अब शिक्षक अपने फोन को स्मार्ट टीवी से जोड़कर बड़े पर्दे पर डिजिटल सामग्री के माध्यम से पढ़ाते हैं, जिससे बच्चों को सीखने में रुचि और सहजता दोनों का अनुभव होता है।

आज विद्यालय में पाँच कंप्यूटर, एक स्मार्ट टीवी, इन्वर्टर आधारित पावर बैकअप, माइक व स्पीकर जैसी डिजिटल सुविधाएँ उपलब्ध हैं। इन सभी डिजिटल उपकरणों की व्यवस्था विद्यालय ने शिक्षकों के सहयोग, गैर-सरकारी संगठनों (NGO) और स्थानीय जनप्रतिनिधियों के सहयोग से की है। शिक्षक अब डिजिटल सामग्री को बड़े स्क्रीन पर प्रदर्शित कर छात्रों को गतिविधि आधारित शिक्षण प्रदान करते हैं, जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की आत्मा के अनुरूप है।

समुदाय से जुड़ाव और संवाद : विद्यालय ने अभिभावकों को सूचना देने और विद्यार्थियों की प्रगति साझा करने के लिए व्हाट्सएप समूह बनाए हैं। यह पहल अभिभावकों और विद्यालय के बीच संवाद को सशक्त बनाने का एक सफल माध्यम बनी है। आज अभिभावक घर लौटने पर अपने मोबाइल फोन बच्चों को सौंपते हैं ताकि वे डिजिटल रूप से पढ़ाई कर सकें।

भौतिक संरचना में सुधार : प्रधानमंत्री जी का सपना है कि 2047 तक भारत न केवल आर्थिक महाशक्ति बने, बल्कि सभी नागरिकों को समान अवसर प्रदान करने वाला समाज भी बने। इस दिशा में कम्पोजिट विद्यालय बरहुआं का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। विद्यालय को मिला विद्यालय राज्य पुरस्कार (₹1,20,000) न केवल एक सम्मान है, बल्कि एक प्रेरणा भी है। इस धनराशि का सदुपयोग कर विद्यालय में डेस्क-बेंच की व्यवस्था की गई, जिससे विद्यार्थियों के बैठने की दशा सुधरी और उनका आत्मसम्मान भी बढ़ा।

विद्यालय भवन की दीवारों, फर्शों और शौचालयों के सुदृढ़ीकरण के लिए ग्राम प्रधान का सहयोग प्राप्त कर विद्यालय ने अपने आधारभूत ढाँचे को भी उन्नत किया है। यह सब इस बात का संकेत है कि यदि नेतृत्व दूरदर्शी हो और समाज सहयोगी, तो कोई भी परिवर्तन असंभव नहीं।

गतिविधि आधारित और व्यावसायिक शिक्षा - भविष्य की तैयारी : नई शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप, कम्पोजिट विद्यालय बरहुआं में शिक्षा केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं है। विद्यालय में खेल आधारित, गतिविधि आधारित और कौशल विकास आधारित शिक्षा को अपनाया गया है।

'मीना मंच' पहल के अंतर्गत विशेष रूप से बालिकाओं को बुनाई, चित्रकला, हस्तकला और सिलाई जैसे कार्यों का प्रशिक्षण दिया जाता है। इससे छात्राओं में आत्मनिर्भरता की भावना उत्पन्न होती है,

एक आवश्यक गुण जिसे विकसित भारत 2047 के निर्माण में प्रमुख भूमिका निभानी है।

भाषा का नवाचार : विद्यालय में शिक्षण का माध्यम अंग्रेजी रखा गया है। अंग्रेजी भाषा में पुस्तकों के माध्यम से विद्यार्थी पढ़ाई करते हैं। शिक्षक बच्चों को सरल अंग्रेजी शब्दों जैसे 'Come', 'Go', 'Eat', 'Fruits Names', 'Vegetables Names' आदि के माध्यम से भाषा कौशल विकसित कर रहे हैं। साथ ही, क्षेत्रीय भाषा भोजपुरी के माध्यम से बच्चों को अपनी जड़ों से जोड़े रखते हुए, हिंदी में दक्षता विकसित की जा रही है।

यह दृष्टिकोण न केवल विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमता बढ़ा रहा है, बल्कि उन्हें बहुभाषी भारत के उपयुक्त नागरिक भी बना रहा है। इस प्रयास का सकारात्मक प्रभाव न केवल विद्यार्थियों पर पड़ा है, बल्कि उनके अभिभावकों पर भी पड़ा है, जो अपने बच्चों के मुंह से अंग्रेजी शब्द सुनकर गर्व का अनुभव करते हैं।

सरकार और शिक्षकों का सराहनीय योगदान : प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत में शिक्षा के क्षेत्र में जो व्यापक परिवर्तन लाए जा रहे हैं, उनका प्रत्यक्ष उदाहरण कम्पोजिट विद्यालय बरहुआं है। डिजिटल इंडिया, नई शिक्षा नीति और आत्मनिर्भर भारत जैसी पहलों के परिणामस्वरूप अब देश के सबसे दूरस्थ गाँवों तक शिक्षा की रोशनी पहुँच रही है।

विद्यालय के शिक्षकगण, जिन्होंने अपने सीमित संसाधनों के बावजूद बच्चों के भविष्य को संवारने का बीड़ा उठाया है, वे वास्तव में समाज के सच्चे राष्ट्रनिर्माता हैं। उनकी निष्ठा और परिश्रम विकसित भारत के निर्माण में नींव का पत्थर है।

नवभारत का स्वप्न : शिक्षा से सशक्तिकरण : कम्पोजिट विद्यालय बरहुआं आज एक आदर्श उदाहरण है कि कैसे सरकारी पहल, शिक्षकों की निष्ठा और अभिभावकों के सहयोग से शिक्षा को जनांदोलन का स्वरूप दिया जा सकता है।

'विकसित भारत 2047' के स्वप्न को साकार करने के लिए हमें ऐसे ही विद्यालयों की आवश्यकता है– जो बच्चों को केवल ज्ञान न दें, बल्कि उन्हें एक संवेदनशील, आत्मनिर्भर और नवाचारशील नागरिक बनाकर देश के स्वर्णिम भविष्य की नींव रखें।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में और समाज के हर घटक के प्रयास से, वह दिन दूर नहीं जब भारत शिक्षा के क्षेत्र में भी विश्वगुरु बनेगा और इस दिशा में कम्पोजिट विद्यालय बरहुआं जैसे प्रयास मील का पत्थर साबित होंगे। ■

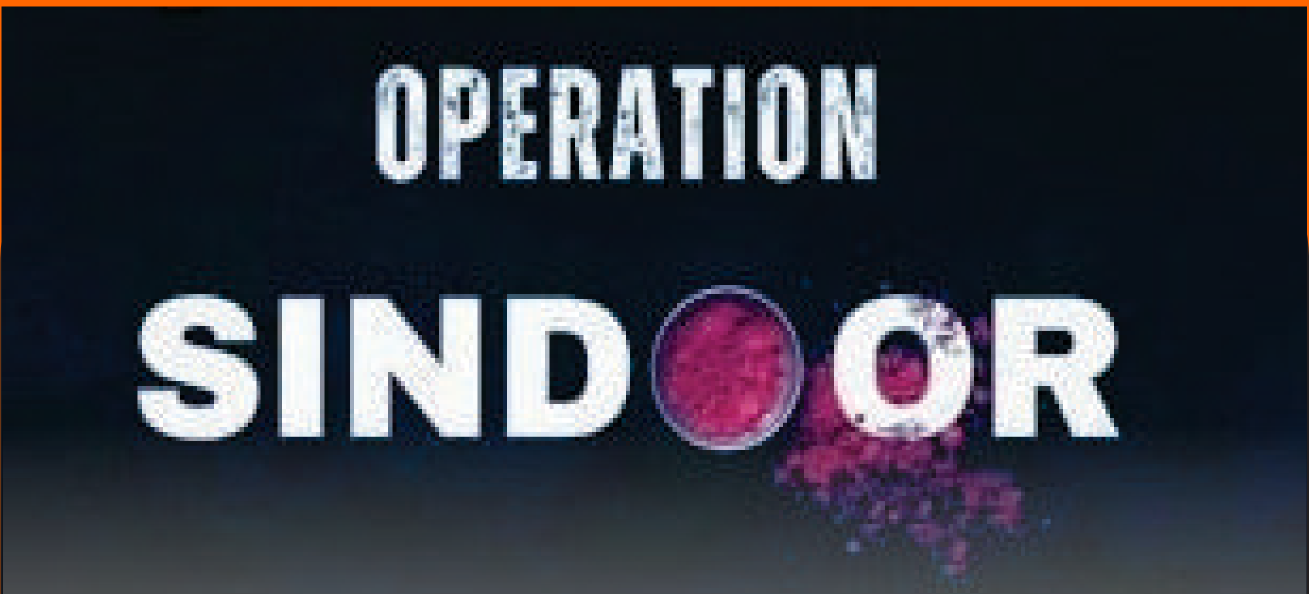

‘सिंदूर का संकल्प’

सिंदूर मिटने वालों तुम, कहां–कहां छुप पाओगे।
भारत के वीर सपूतों से, कभी न तुम भीड़ पाओगे।।
नारियों के सिंदूर सदा, यहां फूलों से महकेंगे।
ऑपरेशन सिंदूर के सैनिक तुम्हें, नष्ट कर जाएंगे

संस्कृति सिखाती हमे सदा, निर्दोषियों को न सताएंगे।
लेकिन तुम्हारा वह हश्र करेंगे, मौत को तुम गिड़गिड़ाओगे।।
चूड़ी की चमक, मेहंदी की महक, जान नहीं तुम पाओगे।
हर साँस तुम्हारी थम जाएगी, जब शेरों की दहाड़ सुन पाओगे।।

जिसने सिंदूर को मिटाना चाहा उसका इतिहास बदल डालेंगे।
जिसने नारी को ललकारा उसकी किस्मत ही जला डालेंगे।।
फौज बढ़ रही तुम्हें रोंदने के लिए, सोचो कहां छुपाओगे।
भारत के शेर जवानों से, कहां तुम अब बच पाओगे।।

जिसने ललकारा नारीत्व को, वो मौत से अब डर जाएंगे।
हम न्याय करेंगे ऐसा, कि वह जीवन भर पछताएंगे।।
मातृशक्ति का श्राप क्या होता है, तुम्हारे लहू बताएंगे।
जिन्होंने छेड़ा इस सिंदूर को, उसका नाम मिटाएंगे।।

करके कायरता तुम घुसे मांद में, तुम सिर्फ गीदड़ कहलाओगे।
अब चीर–फाड़ के सिंह तुम्हें, तुम्हारी औकात दिखलाएंगे।।
आकाश गूंजेगा गर्जन से, धारा धर–धर कांप उठेगी।
जय भारत की जयकारों से, तेरी हर चाल सदा टूटेगी।।

डॉ. वेद प्रकाश
एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष – भूगोल
के. डी. कॉलेज सिम्भावली, जनपद हापुड़

सुखोई
राफेल
BRAHMOS
ब्रह्मोस
BRAHMOS
भारत
के मजबूत रक्षा
कवच
S-400